CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गङ्गासहस्रनामस्तोत्र

ऊ 3/23

आम्नाय-ग्रन्थालय,
जलनिधि, भदैनी
वाराणसी-5

ग्रन्थालय
ी, वाराणसी-५
ऊ 3/23

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

पुस्तकालय-ग्रन्थालय, ... करौली

* श्रीहरिः *

गङ्गासहस्रनामस्तोत्र

अगस्त्य उवाच

विना स्नानेन गङ्गायां नृणां जन्म निरर्थकम् ।
उपायान्तरमस्त्यन्यद् येन स्नानफलं लभेत् ॥ १ ॥

अगस्त्यजी बोले—गङ्गामें स्नान किये बिना मनुष्योंका जन्म व्यर्थ ही बीतता है । क्या कोई दूसरा उपाय भी है, जिससे गङ्गास्नानका फल प्राप्त हो सके ? ॥ १ ॥

अशक्तानां च पङ्गूनामालस्योपहतात्मनाम् ।
दूरदेशान्तरस्थानां गङ्गास्नानं कथं भवेत् ॥ २ ॥

जो असमर्थ हैं, पङ्गु हैं, जिनका मन और उत्साह आलस्यसे नष्टप्राय हो गया है, जो दूरवर्ती किसी दूसरे देशमें रहते हैं, उन्हें गङ्गा-स्नान कैसे मिल सकता है ? ॥ २ ॥

दानं वाथ व्रतं वाथ मन्त्रः स्तोत्रं जपोऽथ वा ।
तीर्थान्तराभिषेको वा देवतोपासनं तु वा ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यद्यस्ति किंचित् षड्वक्त्र गङ्गास्नानफलप्रदम्।
विधानान्तरमात्रेण तद् वद प्रणताय मे ॥ ४ ॥

षडानन ! यदि दान, व्रत, मन्त्र, स्तोत्र, जप, दूसरे तीर्थोंका स्नान अथवा किसी देवताकी उपासना आदि कोई साधन अनुष्ठानमात्रसे गङ्गा-स्नानका फल देनेवाला हो तो मुझ नतमस्तक भक्तको उसका उपदेश कीजिये ॥ ३-४ ॥

त्वत्तो न वेद स्कन्दान्यो गङ्गागर्भसमुद्भव।
परं स्वर्गतरङ्गिण्या महिमानं महामते ॥ ५ ॥

गङ्गाजीके गर्भसे उत्पन्न हुए परम बुद्धिमान् स्कन्दजी ! स्वर्गलोककी नदी गङ्गाकी उत्तम महिमाको आपसे बढ़कर दूसरा कोई नहीं जानता ॥ ५ ॥

स्कन्द उवाच

सन्ति पुण्यजलानीह सरांसि सरितो मुने।
स्थाने स्थाने च तीर्थानि जितात्माध्युषितानि च ॥६॥

स्कन्दने कहा—मुने ! इस जगत्में बहुत-से पवित्र जलवाले सरोवर और सरिताएँ हैं तथा स्थान-स्थानपर अनेक तीर्थ हैं, जिनमें जितात्मा साधु पुरुष निवास करते हैं ॥ ६ ॥

दृष्टप्रत्ययकारीणि महामहिमभाञ्ज्यपि।
परं स्वर्गतरङ्गिण्याः कोट्यंशोऽपि न तत्र वै ॥ ७ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वे तीर्थ दर्शनमात्रसे अपनी महत्ताके प्रति विश्वास उत्पन्न करनेवाले—प्रत्यक्ष फल देनेवाले हैं और महान् महिमाके भागी भी हैं; तथापि उनमें स्वर्गनदी गङ्गाकी महिमाका करोड़वाँ अंश भी नहीं है ॥ ७ ॥

अनेनैवानुमानेन बुध्यस्व कलशोद्भव ।
दध्रे गङ्गोत्तमाङ्गेन देवदेवेन शम्भुना ॥ ८ ॥

कुम्भजन्मा अगस्त्यजी ! समझ लो इसी अनुमानसे देवाधिदेव भगवान् शंकरने अपने मस्तकपर गङ्गाजीको धारण कर रखा है ॥ ८ ॥

स्नानकालेऽन्यतीर्थेषु जप्यते जाह्नवी जनैः ।
विना विष्णुपदीं क्वान्यत् समर्थमघमोचने ॥ ९ ॥

अन्य तीर्थोंमें स्नान करते समय (भी) लोग गङ्गाजीका नाम जपते हैं। विष्णुपदी गङ्गाको छोड़कर दूसरा तीर्थ कहाँ पापमोचनमें समर्थ है ॥ ९ ॥

गङ्गास्नानफलं ब्रह्मन् गङ्गायामेव लभ्यते ।
यथा द्राक्षाफलस्वादो द्राक्षायामेव नान्यतः ॥ १० ॥

ब्रह्मन् ! गङ्गास्नानका फल तो गङ्गाजीमें ही मिलता है, अन्यत्र नहीं—ठीक उसी तरह, जैसे द्राक्षाफल (अंगूर) का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

स्वाद द्राक्षामें ही मिलता है, अन्यत्र नहीं ॥ १० ॥

अस्त्युपाय इह त्वेकः स्याद् येनाविकलं फलम्।
स्नानस्य देवसरितो महागुह्यतमो मुने ॥११॥

मुने! जगत्में एक परम गोपनीय उपाय अवश्य है, जिससे देवनदी गङ्गामें स्नान करनेका पूरा फल प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

शिवभक्ताय शान्ताय विष्णुभक्तिपराय च ।
श्रद्धालवे त्वास्तिकाय गर्भवासमुमुक्षवे ॥१२॥
कथनीयं न चान्यस्य कस्यचित् केनचित् क्वचित्।

वह उपाय उसीको बतलाना चाहिये, जो भगवान् शिव और विष्णुका भक्त, शान्त, श्रद्धालु, आस्तिक तथा गर्भवाससे छूटनेकी इच्छा रखता हो । दूसरे किसीके सामने कभी किसीको उसकी चर्चा नहीं करनी चाहिये ॥ १२½ ॥

इदं रहस्यं परमं महापातकनाशनम् ॥१३॥
महाश्रेयस्करं पुण्यं मनोरथकरं परम् ।
द्युनदीप्रीतिजनकं शिवसंतोषसंतति ॥१४॥

वह परम रहस्यमय साधन महापातकोंका नाश करनेवाला है । उससे महान् श्रेयकी प्राप्ति होती है; वह परम पुण्यदायक, मनोरथकी सिद्धि करनेवाला, गङ्गाजीके लिये प्रीति-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनक तथा शिवजीके संतोषका विस्तार करनेवाला है ॥ १३-१४ ॥

नाम्नां सहस्रं गङ्गायाः स्तवराजेषु शोभनम् ।
जप्यानां परमं जप्यं वेदोपनिषदां समम् ॥१५॥
जपनीयं प्रयत्नेन मौनिना वाचकं विना ।
शुचिस्थानेषु शुचिना सुस्पष्टाक्षरमेव च ॥१६॥

वह उपाय है—भगवती गङ्गाका सहस्रनामस्तोत्र । वह सम्पूर्ण उत्तम स्तोत्रोंमें श्रेष्ठ है, जपने योग्य मन्त्रोंमें सर्वोत्तम है और वेदोंके उपनिषद् भागके समान मनन करने योग्य है । साधकको मौन होकर प्रयत्नपूर्वक इसका जप करना चाहिये । साथ ही पवित्र स्थानोंमें स्वयं भी पवित्रभावसे बैठकर सुस्पष्ट अक्षरोंमें इसका पाठ करना चाहिये ॥ १५-१६ ॥

स्कन्द उवाच

ॐ नमो गङ्गादेव्यै

ओंकाररूपिण्यजरातुलानन्तामृतस्रवा ।
अत्युदाराभयाशोकालकनन्दामृतामला ॥१७॥

स्कन्दजी कहते हैं—ॐ नमो गङ्गादेव्यै । १ ॐकाररूपिणी–प्रणवरूपा, सच्चिदानन्दस्वरूपा अथवा ब्रह्मा-विष्णु-शिवरूपिणी, २ अजरा–वृद्धावस्थासे रहित, ३ अतुला–तुलनारहित, ४ अनन्ता–जिसका कभी कहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भी अन्त न हो, ५ अमृतस्रवा—अमृतमय जलका स्रोत बहानेवाली, ६ अत्युदारा—अतिशय उदार, किसीको भी शरणमें लेने अथवा सद्गति देनेमें संकोच न करनेवाली, ७ अभया—भयरहित, जिसका आश्रय लेनेसे संसार-भयका निवारण हो जाता है, ८ अशोका—शोकसे रहित अथवा जिससे शोकका निवारण होता है, ९ अलकनन्दा—अलकावासियोंको आनन्द देनेवाली अथवा केशोंमें जिसके जलका स्पर्श होनेसे आनन्द प्राप्त होता है, १० अमृता—सुधारूपिणी अथवा मुक्ति देनेके कारण अमृतस्वरूपा, ११ अमला—निर्मल जलवाली अथवा संसाररूपी मलका नाश करनेवाली ॥ १७ ॥

अनाथवत्सलामोघापांयोनिरमृतप्रदा ।
अव्यक्तलक्षणाक्षोभ्यानवच्छिन्नापराजिता ॥१८॥

१२ अनाथवत्सला—अनाथोंपर स्नेह करनेवाली, १३ अमोघा-जिनकी सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती, १४ अपांयोनिः—जलकी उत्पत्तिका स्थान, १५ अमृतप्रदा—मोक्ष प्रदान करनेवाली, १६ अव्यक्तलक्षणा—अव्यक्त—ब्रह्मस्वरूपा अथवा अव्याकृत प्रकृतिरूपा, १७ अक्षोभ्या—किसीके द्वारा भी क्षुब्ध न की जा सकनेवाली, १८ अनवच्छिन्ना—अपने दिव्य एवं व्यापक स्वरूपके कारण त्रिविध परिच्छेदसे शून्य, १९ अपरा—जिनके लिये कोई भी पराया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नहीं है अथवा जिससे श्रेष्ठ दूसरा कोई नहीं है, २० अजिता—किसीसे भी परास्त न होनेवाली ॥ १८ ॥

अनाथनाथाभीष्टार्थसिद्धिदानङ्गवर्द्धिनी ।
अणिमादिगुणाऽऽधाराग्रगण्यालीकहारिणी ॥१९॥

२१ अनाथनाथा—अनाथोंको भी शरण देनेवाली, २२ अभीष्टार्थसिद्धिदा—भक्तजनोंके अभीष्ट अर्थको सिद्ध करनेवाली, २३ अनङ्गवर्द्धिनी—कामनाकी पूर्ति या मनोवाञ्छित भोगोंकी वृद्धि करनेवाली अथवा कामभावका नाश या निराकार ब्रह्मकी प्राप्ति करानेवाली, २४ अणिमादिगुणा—अणिमा आदि आठ प्रकारके ऐश्वर्य प्रदान करना जिनका स्वाभाविक गुण है, २५ आधारा—'अ' अर्थात् विष्णु आधार हैं जिनके, २६ अग्रगण्या—श्रेष्ठता और पवित्रतामें सबसे प्रथम गणना करने योग्य, २७ अलीकहारिणी—भ्रमका नाश करनेवाली ॥१९॥

अचिन्त्यशक्तिरनघाद्भुतरूपाघहारिणी ।
अद्रिराजसुताष्टाङ्गयोगसिद्धिप्रदाच्युता ॥२०॥

२८ अचिन्त्यशक्तिः—जिनकी शक्ति चिन्तनका विषय नहीं है, २९ अनघा निष्पाप, ३० अद्भुतरूपा—आश्चर्यमय स्वरूपवाली, ३१ अघहारिणी—अपने कीर्तन,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दर्शन, स्पर्श और जलमें गोता लगानेसे सबके पापोंको हर लेनेवाली, ३२ अद्रिराजसुता—गिरिराज हिमालयकी पुत्री, ३३ अष्टाङ्गयोगसिद्धिप्रदा—अष्टाङ्गयोगसे प्राप्त होनेवाली सिद्धि (मुक्ति)को प्रदान करनेवाली, ३४ अच्युता—अपनी महिमासे कभी च्युत न होनेवाली अथवा विष्णुस्वरूपा ॥ २० ॥

अक्षुण्णशक्तिरसुदानन्ततीर्थामृतोदका ।
अनन्तमहिमापारानन्तसौख्यप्रदान्नदा ॥२१॥

३५ अक्षुण्णशक्तिः—जिनकी शक्ति कभी खण्डित या कुण्ठित नहीं होती, ३६ असुदा—अपने जीवनरूपी जलसे प्राणदान करनेवाली, ३७ अनन्ततीर्था—सर्वतीर्थमयी होनेके कारण असंख्य तीर्थोंसे युक्त, ३८ अमृतोदका—अमृतके समान मधुर अथवा मोक्षदायक जलवाली, ३९ अनन्तमहिमा—जिनकी महिमाका कहीं अन्त नहीं है, ४० अपारा—सीमारहित, ४१ अनन्तसौख्यप्रदा—मोक्ष या भगवत्प्राप्तिका अक्षय सुख प्रदान करनेवाली, ४२ अन्नदा—भोग प्रदान करनेवाली ॥ २१ ॥

अशेषदेवतामूर्तिरघोरामृतरूपिणी ।
अविद्याजालशमनी ह्यप्रतर्क्यगतिप्रदा ॥२२॥

४३ अशेषदेवतामूर्तिः—सम्पूर्ण देवस्वरूपा,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४४ अघोरा—शान्तस्वरूपा, ४५ अमृतरूपिणी—मोक्षस्वरूपा, ४६ अविद्याजालशमनी—अविद्यारूपी आवरणका नाश करनेवाली, ४७ अप्रतर्क्यगतिप्रदा—जहाँ मन और वाणीकी पहुँच नहीं है, ऐसी मोक्षरूप गति प्रदान करनेवाली ॥ २२ ॥

अशेषविघ्नसंहर्त्री त्वशेषगुणगुम्फिता ।
अज्ञानतिमिरज्योतिरनुग्रहपरायणा ॥२३॥

४८ अशेषविघ्नसंहर्त्री—समस्त विघ्नोंका संहार करनेवाली, ४९ अशेषगुणगुम्फिता—सम्पूर्ण सद्गुणोंसे ग्रथित, ५० अज्ञानतिमिरज्योतिः—अज्ञानमय अन्धकारका नाश करनेवाली ज्योतिःस्वरूपा, ५१ अनुग्रहपरायणा—भक्तोंपर अनुग्रह करनेमें तत्पर ॥ २३ ॥

अभिरामानवद्याङ्ग्यनन्तसाराकलङ्किनी ।
आरोग्यदाऽऽनन्दवल्ली त्वापन्नार्तिविनाशिनी॥२४॥

५२ अभिरामा—सब ओरसे मनोरम, ५३ अनवद्याङ्गी—निर्दोष—सर्वाङ्गसुन्दर स्वरूपवाली, ५४ अनन्तसारा—जिनके सार अर्थात् शक्तिका अन्त नहीं है, ५५ अकलङ्किनी—कलङ्कसे रहित, ५६ आरोग्यदा—अपने अमृतमय जलसे आरोग्य प्रदान करनेवाली, ५७ आनन्दवल्ली—दिव्य आनन्दकी प्राप्ति करानेवाली कल्पलताके समान, ५८ आपन्नार्ति-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विनाशिनी—शरणमें आये हुए दुखी जीवोंकी पीड़ा (संसार-बन्धन) का नाश करनेवाली ॥ २४ ॥

आश्चर्यमूर्तिरायुष्या
ह्याढ्याऽऽद्याऽऽप्राऽऽर्यसेविता ।
आप्यायिन्याप्तविद्याऽऽख्या
त्वानन्दाऽऽश्वासदायिनी ॥२५॥

५९ आश्चर्यमूर्तिः—आश्चर्यमय स्वरूपवाली, ६० आयुष्या—आयु प्रदान करनेवाली, ६१ आढ्या—दिव्य वैभवसे सम्पन्न, ६२ आद्या—सबकी कारणभूता आदिशक्ति, ६३ आप्रा—सब ओरसे परिपूर्ण, ६४ आर्यसेविता—श्रेष्ठ पुरुषों (देवता और ऋषि आदि) के द्वारा सेवित, ६५ आप्यायिनी—सबको तृप्त करनेवाली, ६६ आप्तविद्या—ब्रह्मविद्यास्वरूपा अथवा सम्पूर्ण विद्याओंको जाननेवाली, ६७ आख्या—सदा और सर्वत्र प्रसिद्ध, ६८ आनन्दा—सुख-स्वरूपा, ६९ आश्वासदायिनी—नरक आदिके भयसे डरे हुए प्राणियोंको सान्त्वना प्रदान करनेवाली ॥ २५ ॥

आलस्यघ्न्यापदां हन्त्री ह्यानन्दामृतवर्षिणी ।
इरावतीष्टदात्रीष्टा त्विष्टापूर्तफलप्रदा ॥२६॥

७० आलस्यघ्नी—आलस्यका नाश करनेवाली,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७१ आपदां हन्त्री—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक आपत्तियोंका नाश करनेवाली, ७२ आनन्दामृतवर्षिणी—ब्रह्मानन्दमय अमृतकी वर्षा करनेवाली, ७३ इरावती—इरावती नामकी नदी अथवा इरा अर्थात् लक्ष्मीसे युक्त, ७४ इष्टदात्री—भक्तोंको अभीष्ट वस्तु देनेवाली, ७५ इष्टा—आराध्यदेवी अथवा सबके द्वारा पूजित, ७६ इष्टापूर्तफलप्रदा—इष्ट अर्थात् यज्ञ, होम आदि और आपूर्त—कूप, तड़ाग, वापी-निर्माण आदिके पुण्यफलको देनेवाली ॥ २६ ॥

इतिहासश्रुतीड्यार्था त्विहामुत्रशुभप्रदा ।
इज्याशीलसमिज्येष्ठा त्विन्द्रादिपरिवन्दिता ॥२७॥

७७ इतिहासश्रुतीड्यार्था—इतिहास और वेद दोनोंके द्वारा जिनके पुरुषार्थकी स्तुति की जाती है, ७८ इहामुत्रशुभप्रदा—इसलोक और परलोकमें भी कल्याण प्रदान करनेवाली, ७९ इज्याशीलसमिज्येष्ठा—यज्ञ आदि करनेवाले कर्मनिष्ठ तथा समस्वरूप ब्रह्मका विचार करनेवाले ज्ञानी, दोनोंमें श्रेष्ठ अथवा इन दोनोंके लिये श्रेष्ठ मानकर पूजनीय, ८० इन्द्रादिपरिवन्दिता—इन्द्र आदि देवताओंद्वारा सब ओरसे वन्दित ॥ २७ ॥

इलालंकारमालेद्धा त्विन्दिरा रम्यमन्दिरा ।
इदिन्दिरादिसंसेव्या त्वीश्वरीश्वरवल्लभा ॥२८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८१ इलालंकारमाला—पृथ्वीको विभूषित करनेवाली पुष्पमालाके सदृश, ८२इद्धा—दीप्तिमती अथवा प्रकाशस्वरूपा, ८३ इन्दिरा—लक्ष्मीस्वरूपा, ८४ रम्यमन्दिरा—भगवच्चरणारविन्द, ब्रह्मकमण्डलु तथा भगवान् शंकरका मस्तक—इन सब रमणीय आश्रयोंवाली ८५ इदिन्दिरादिसंसेव्या—निरन्तर लक्ष्मी आदि देवियोंके द्वारा सेवन करने योग्य, ८६ ईश्वरी—ऐश्वर्यसम्पन्न, ८७ ईश्वरवल्लभा—शंकरप्रिया ॥ २८ ॥

ईतिभीतिहरेड्या च त्वीडनीयचरित्रभृत् ।
उत्कृष्टशक्तिरुत्कृष्टोडुपमण्डलचारिणी ॥२९॥

८८ ईतिभीतिहरा—अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डियोंका उपद्रव, चूहोंका उपद्रव, तोते आदि पक्षियोंकी अधिकता और दूसरे राजाकी चढ़ाई—इन छः प्रकारके उपद्रवोंका भय दूर करनेवाली, ८९ ईड्या—स्तवन करने योग्य ९० ईडनीयचरित्रभृत्—स्तुत्य चरित्र धारण करनेवाली, ९१ उत्कृष्टशक्तिः—उत्तम शक्तिसे युक्त, ९२ उत्कृष्टा—श्रेष्ठ, ९३ उडुपमण्डलचारिणी—चन्द्रमण्डलमें विचरनेवाली ॥ २९॥

उदिताम्बरमार्गोस्रोरगलोकविहारिणी ।
उक्षोर्वरोत्पलोत्कुम्भा उपेन्द्रचरणद्रवा ॥३०॥

९४ उदिताम्बरमार्गा—जिसके द्वारा आकाशमें मार्गका

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.

उदय होता है अथवा जो ऊर्ध्वलोकमें जानेके लिये प्रकाशित मार्गके समान है, ९५ उस्रा—उज्ज्वल किरणके समान प्रकाशमान, ९६ उरगलोकविहारिणी—पाताललोकमें प्रवाहित होनेवाली, ९७ उक्षा—भूतलको सींचनेवाली, ९८ उर्वरा—भूमिको उर्वरा (उपजाऊ) बनानेमें हेतु, ९९ उत्पला—कमलस्वरूपा, १०० उत्कुम्भा—जिसमें भरे जानेवाले कलश उत्कृष्ट हो जाते हैं, १०१ उपेन्द्रचरणद्रवा—भगवान् वामनके चरण पखारनेसे प्रकट चरणोदकस्वरूपा ॥३०॥

उदन्वत्पूर्तिहेतुश्चोदारोत्साहप्रवर्द्धिनी ।
उद्वेगघ्न्युष्णशमनी ह्युष्णरश्मिसुताप्रिया ॥३१॥

१०२ उदन्वत्पूर्तिहेतुः—समुद्रको पूर्ण करनेमें कारणभूत, १०३ उदारा—उत्तम गति प्रदान करनेमें उदार, १०४ उत्साहप्रवर्द्धिनी—अपने आश्रितोंका उत्साह बढ़ानेवाली, १०५ उद्वेगघ्नी—घबराहट अथवा भयको मिटानेवाली, १०६ उष्णशमनी—गर्मीको शान्त करनेवाली, १०७ उष्णरश्मिसुताप्रिया—सूर्यकन्या यमुनाकी प्रिय सखी ॥३१॥

उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिण्युपरिचारिणी ।
ऊर्जं वहन्त्यूर्जधरोर्जावती चोर्मिमालिनी ॥३२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizaqtion by eGangotri

१०८ उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणी—ब्रह्मशक्ति, विष्णुशक्ति तथा रुद्रशक्तिके रूपमें विश्वकी उत्पत्ति, पालन और संहार करनेवाली, १०९ उपरिचारिणी—पृथ्वी अथवा स्वर्ग-लोकके ऊपर विचरनेवाली, ११० ऊर्जं वहन्ती—बलवर्द्धक जलको प्रवाहित करनेवाली, १११ ऊर्जधरा—बल अथवा प्राणशक्तिको धारण करनेवाली, ११२ ऊर्जावती—बल अथवा प्राणशक्तिका आश्रय, ११३ ऊर्मिमालिनी—तरङ्ग-मालाओंसे युक्त ॥३२॥

ऊर्ध्वरेतःप्रियोर्ध्वाध्वा ह्यूर्मिलोर्ध्वगतिप्रदा ।
ऋषिवृन्दस्तुतर्द्धिश्च ऋणत्रयविनाशिनी ॥३३॥

११४ ऊर्ध्वरेतःप्रिया—ऊर्ध्वरेता महात्माओंको प्रिय लगनेवाली, ११५ ऊर्ध्वाध्वा—जिनका मार्ग ऊपर विष्णु-लोककी ओर गया है, ११६ ऊर्मिला—लहरोंको धारण करनेवाली अथवा भक्तोंके शोक, मोह, जरा, मृत्यु, क्षुधा, पिपासा—इन छः ऊर्मियोंको ग्रहण करनेवाली, ११७ ऊर्ध्वगतिप्रदा—अपने सम्पर्कमें आये हुए मुमूर्षुओंको ऊर्ध्वगति (स्वर्ग एवं मोक्ष) प्रदान करनेवाली, ११८ ऋषिवृन्दस्तुता—महर्षियोंके समुदायसे प्रशंसित, ११९ ऋद्धिः—समृद्धिस्वरूपा, १२० ऋणत्रयविनाशिनी—देवऋण, ऋषिऋण और पितृऋणका नाश करनेवाली ॥३३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऋतम्भरर्द्धिदात्री च ऋक्स्वरूपा ऋजुप्रिया।
ऋक्षमार्गवहर्क्षार्चिर्ऋजुमार्गप्रदर्शिनी ॥३४॥

१२१ ऋतम्भरा–ऋत अर्थात् सत्य एवं ब्रह्मका आश्रय लेनेवाली बुद्धिस्वरूपा, १२२ ऋद्धिदात्री–समृद्धि देनेवाली, १२३ ऋक्स्वरूपा–ऋग्वेदरुपिणी, १२४ ऋजुप्रिया–सरलस्वभाववाले साधु-महात्माओंको प्रिय लगनेवाली, १२५ ऋक्षमार्गवहा–नक्षत्रलोकके मार्गसे बहनेवाली, १२६ ऋक्षार्चिः–ताराओंके सदृश उज्ज्वल कान्तिवाली, १२७ ऋजुमार्गप्रदर्शिनी–धर्म एवं मोक्षका सरल मार्ग दिखानेवाली ॥ ३४ ॥

एधिताखिलधर्मार्था त्वेकैकामृतदायिनी ।
एधनीयस्वभावैज्या त्वेजिताशेषपातका ॥३५॥

१२८ एधिताखिलधर्मार्था–सम्पूर्ण धर्म और अर्थको बढ़ानेवाली, १२९ एका–अपने ढंगकी अकेली, १३० एकामृतदायिनी–एकमात्र अमृतस्वरूप ब्रह्मकी प्राप्ति करानेवाली, १३१ एधनीयस्वभावा–जिनके दया, उदारता आदि स्वाभाविक गुण निरन्तर बढ़ने योग्य हों १३२ एज्या–पूजनीया, १३३ एजिताशेषपातका–सम्पूर्ण पातकोंको कम्पित करनेवाली ॥ ३५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऐश्वर्यदैश्वर्यरूपा ह्यैतिह्यं ह्यैन्दवीद्युतिः ।
ओजस्विन्योषधीक्षेत्रमोजोदौदनदायिनी ॥३६॥

१३४ ऐश्वर्यदा—अणिमा, महिमा आदि ऐश्वर्य प्रदान करनेवाली, १३५ ऐश्वर्यरूपा—भगवद्विभूतिस्वरूपा, १३६ ऐतिह्यम्—इतिहासस्वरूपा, १३७ ऐन्दवीद्युतिः—चन्द्रमाकी कान्तिरूपा, १३८ ओजस्विनी—शक्तिमती, १३९ ओषधीक्षेत्रम्—अन्न पैदा करनेका क्षेत्र, १४० ओजोदा—बल एवं तेज प्रदान करनेवाली, १४१ ओदनदायिनी—धानकी पैदावार बढ़ाकर भात देनेवाली अथवा अन्नदायिनी अन्नपूर्णारूपा ॥ ३६ ॥

ओष्ठामृतौन्नत्यदात्री त्वौषधं भवरोगिणाम् ।
औदार्यचञ्चुरौपेन्द्री त्वौग्री ह्यौमेयरूपिणी ॥३७॥

१४२ ओष्ठामृता—जिनका जल ओठोंके भीतर आनेपर अमृतके समान प्रतीत होता है अथवा जिनके ओठमें अमृत हो, १४३ औन्नत्यदात्री—आध्यात्मिक, लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति प्रदान करनेवाली, १४४ भवरोगिणाम् औषधम्—संसार-रोगसे ग्रस्त प्राणियोंके लिये औषधरूपा, १४५ औदार्यचञ्चुरा—उदारतामें कुशल, १४६ औपेन्द्री—उपेन्द्र अर्थात् वामनरूपधारी विष्णुकी पत्नी लक्ष्मीस्वरूपा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथवा विष्णुकी चरणोदकस्वरूपा, १४७ औग्री—रुद्रकी शक्ति, १४८ औमेयरूपिणी—उमाके सदृश रूपवाली ॥३७॥

अम्बराध्ववहाम्बष्ठाम्बरमालाम्बुजेक्षणा ।
अम्बिकाम्बुमहायोनिरन्धोदान्धकहारिणी ॥३८॥

१४९ अम्बराध्ववहा—आकाशमार्गपर बहनेवाली, १५० अम्बष्ठा—अ अर्थात् विष्णुकी शरण लेनेवाले वैष्णवोंको अम्ब कहते हैं, उनमें स्थित होनेवाली, १५१ अम्बरमाला—आकाशमें पुष्पहारके समान शोभा पानेवाली, १५२ अम्बुजेक्षणा—कमलरूप अथवा कमलसदृश नेत्रोंवाली, १५३ अम्बिका—जगदम्बास्वरूपा, १५४ अम्बुमहायोनिः—जलकी उत्पत्तिका मूल कारण· १५५ अन्धोदा—अन्न देनेवाली, १५६ अन्धकहारिणी—अन्धकासुरका नाश करनेवाले शिवकी शक्ति अथवा अज्ञानान्धकारका नाश करनेवाली ३८

अंशुमाला ह्यंशुमती त्वङ्गीकृतषडानना ।
अन्धतामिस्रहन्त्र्यन्धुरञ्जना ह्यञ्जनावती ॥३९॥

१५७ अंशुमाला—तेजका समुदाय, १५८ अंशुमती—तेजोमयी, १५९अङ्गीकृतषडानना—छः मुखोंवाले स्कन्दको पुत्ररूपमें स्वीकार करनेवाली, १६० अन्धतामिस्रहन्त्री—अन्धतामिस्र आदि नरकोंका निवारण करनेवाली,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१६१ अन्धुः—कूपमात्रमें स्वयं प्रकट होनेवाली, १६२ अञ्जना—आध्यात्मिक दृष्टिको शुद्ध करनेके लिये दिव्य अञ्जनरूपा अथवा हनुमान्‌जीको जन्म देनेवाली अञ्जनास्वरूपा, १६३ अञ्जनावती—ईशानकोणकी रक्षा करनेवाली हस्तिनी अञ्जनावतीसे अभिन्न ॥ ३९ ॥

कल्याणकारिणी काम्या कमलोत्पलगन्धिनी ।
कुमुद्वती कमलिनी कान्तिः कल्पितदायिनी ॥४०॥

१६४ कल्याणकारिणी—सबका कल्याण करनेवाली, १६५ काम्या—कमनीया, १६६ कमलोत्पलगन्धिनी—कमल एवं उत्पलोंकी सुगन्धसे सुवासित, १६७ कुमुद्वती—कुमुदिनीके पुष्पोंसे युक्त, १६८ कमलिनी—कमलपुष्पोंसे अलंकृत, १६९ कान्तिः—दीप्तिमयी, १७० कल्पितदायिनी—मनोवाञ्छित वस्तु देनेवाली ॥ ४० ॥

काञ्चनाक्षी कामधेनुः कीर्तिकृत् क्लेशनाशिनी ।
क्रतुश्रेष्ठा क्रतुफला कर्मबन्धविभेदिनी ॥४१॥

१७१ काञ्चनाक्षी—सुवर्णके समान उद्दीप्त नेत्रोंवाली, १७२ कामधेनुः—भक्तोंकी मनोवाञ्छा पूर्ण करनेमें कामधेनुके समान अथवा कामधेनुस्वरूपा, १७३ कीर्तिकृत्—अपने सुयशका विस्तार करनेवाली, १७४ क्लेशनाशिनी—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेशरूप पाँच क्लेशों-का नाश करनेवाली, १७५ क्रतुश्रेष्ठा–यज्ञोंमें श्रेष्ठ अश्वमेध आदि यज्ञोंसे अधिक फल देनेवाली, १७६ क्रतुफला–जिसमें स्नान करनेसे यज्ञोंका फल प्राप्त होता है, १७७ कर्मबन्धविभेदिनी–शुभाशुभकर्मजनित बन्धनका नाश करनेवाली ॥ ४१ ॥

कमलाक्षी क्लमहरा कृशानुतपनद्युतिः ।
करुणार्द्रा च कल्याणी कलिकल्मषनाशिनी ॥४२॥

१७८ कमलाक्षी–कमलके समान या कमलरूप नेत्रों-वाली, १७९ क्लमहरा–सांसारिक क्लेशको हर लेनेवाली, १८० कृशानुतपनद्युतिः–आधिदैविक स्वरूपमें अग्नि और सूर्यके समान कान्तिवाली, १८१ करुणार्द्रा–करुणारससे भीगी हुई, १८२ कल्याणी–मङ्गलस्वरूपा, १८३ कलि-कल्मषनाशिनी–कलिकालमें होनेवाले पापोंका नाश करनेवाली ॥ ४२ ॥

कामरूपा क्रियाशक्तिः कमलोत्पलमालिनी ।
कूटस्था करुणा कान्ता कूर्मयाना कलावती ॥४३॥

१८४ कामरूपा–इच्छानुसार रूप धारण करनेवाली, १८५ क्रियाशक्तिः–क्रियाशक्तिरूपा १८६ कमलोत्पल-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मालिनी—कमल और उत्पलोंकी माला धारण करनेवाली, १८७ कूटस्था—ब्रह्मस्वरूपा—ब्रह्मद्रवरूपा, १८८ करुणा—दयामयी, १८९ कान्ता -कान्तिमती, १९० कूर्मयाना—कच्छपरू वाहनवाली, १९१ कलावती—चौसठ कलाओंको जाननेवाली ४३

कमला कल्पलतिका काली कलुषवैरिणी ।
कमनीयजला कम्रा कपर्दिसुकपर्दगा ॥४४॥

१९२ कमला—लक्ष्मीस्वरूपा, १९३ कल्पलतिका—कल्पलताके समान समस्त कामनाओंको पूर्ण करनेवाली, १९४ काली—कालिकास्वरूपा, १९५ कलुषवैरिणी—पापोंका नाश करनेवाली, १९६ कमनीयजला—कमनीय अर्थात् स्वच्छ जलवाली, १९७ कम्रा—मनोहर स्वरूपवाली, १९८ कपर्दिसुकपर्दगा—भगवान् शंकरके सुन्दर जटाजूटमें वास करनेवाली ॥ ४४ ॥

कालकूटप्रशमनी कदम्बकुसुमप्रिया ।
कालिन्दी केलिललिता कलकल्लोलमालिका ॥४५॥

१९९ कालकूटप्रशमनी—भगवान् शंकरके द्वारा किये हुए कालकूट नामक विषकी ज्वालाको अपनी अमृतमयी धारासे शान्त करनेवाली, २०० कदम्बकुसुमप्रिया—कदम्बके पुष्पोंमें रुचि रखनेवाली, २०१ कालिन्दी—कलिन्दकन्या यमुनास्वरूपा—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संगमके बाद उनके साथ एक रूप हो जानेवाली २०२ केलिललिता—तरङ्गोंकी क्रीडासे मनोहर प्रतीत होनेवाली, २०३ कलकल्लोलमालिका— मनोहर लहरोंकी श्रेणियोंसे सुशोभित ॥ ४५ ॥

क्रान्तलोकत्रया कण्डूः कण्डूतनयवत्सला ।
खड्गिनी खड्गधाराभा खगा खण्डेन्दुधारिणी ।४६।

२०४ क्रान्तलोकत्रया—स्वर्ग, भूतल और पाताल—तीनों लोकोंको अपनी धारासे आक्रान्त करनेवाली, २०५ कण्डूः—अविद्या और उसके कार्यरूप आवागमनको खण्डित करनेवाली, २०६ कण्डूतनयवत्सला—'कण्डू' शब्द मृकण्डुका वाचक है, उनके पुत्र मार्कण्डेयजीपर वात्सल्य रखनेवाली, २०७ खड्गिनी—देवीरूपसे खड्ग धारण करनेवाली, २०८ खड्गधाराभा—तलवारकी धारके समान उज्ज्वल कान्तिवाली, २०९ खगा—आकाशमें प्रवाहित होनेवाली, २१० खण्डेन्दुधारिणी—अर्धचन्द्रको मस्तकपर धारण करनेवाली ॥ ४६ ॥

खेखेलगामिनी खस्था खण्डेन्दुतिलकप्रिया ।
खेचरी खेचरीवन्द्या ख्यातिःख्यातिप्रदायिनी ॥४७॥

२११ खेखेलगामिनी—आकाशमें लीलापूर्वक बहनेवाली, २१२ खस्था—आकाश अथवा ब्रह्ममें स्थित, २१३ खण्डेन्दुतिलकप्रिया—चन्द्रभाल शिवकी प्रिया अथवा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्धचन्द्राकार तिलकसे प्रसन्न होनेवाली, २१४ खेचरी—आकाशमें विचरण करनेवाली, २१५ खेचरीवन्द्या—आकाशमें विहार करनेवाली सिद्धाङ्गनाओंकी वन्दनीया, २१६ ख्यातिः—कीर्तिस्वरूपा, २१७ ख्यातिप्रदायिनी—यश देनेवाली ॥ ४७ ॥

खण्डितप्रणताघौघा खलबुद्धिविनाशिनी ।
खातैनःकंदसंदोहा खड्गखट्वाङ्गखेटिनी ॥४८॥

२१८ खण्डितप्रणताघौघा-शरणागतोंकी पापराशिका खण्डन करनेवाली, २१९ खलबुद्धिविनाशिनी—खलोंकी बुद्धि अथवा खलतापूर्ण बुद्धिका विनाश करनेवाली, २२० खातैनःकंदसंदोहा—पापरूपी कंदसमुदायको उखाड़ फेंकनेवाली, २२१ खड्गखट्वाङ्गखेटिनी—खड्ग (तलवार), खट्वाङ्ग (खाटके पायेके आकारवाला शस्त्र विशेष) और खेट (ढाल) धारण करनेवाली ॥ ४८ ॥

खरसंतापशमनी खनिः पीयूषपाथसाम् ।
गङ्गा गन्धवती गौरी गन्धर्वनगरप्रिया ॥४९॥

२२२ खरसंतापशमनी—तीखे तापको शान्त करनेवाली, २२३ पीयूषपाथसां खनिः—अमृतके समान मधुर जलकी खान, २२४ गङ्गा—स्वर्गाद् गां गतवतीति गङ्गा—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वर्गसे भूतलपर गमन करनेके कारण गङ्गा नामसे प्रसिद्ध, अथवा कलकल गान करनेवाली या ब्रह्मद्रवरूपा सच्चिदानन्दमयी देवी, २२५ गन्धवती—पृथ्वीस्वरूपा अथवा उत्तम गन्धसे युक्त, २२६ गौरी—गौर वर्णवाली अथवा पार्वतीस्वरूपा, २२७ गन्धर्वनगरप्रिया—गन्धर्व-नगरके निवासियोंको प्रिय लगनेवाली ॥ ४९ ॥

गम्भीराङ्गी गुणमयी गतातङ्का गतिप्रिया ।
गणनाथाम्बिका गीता गद्यपद्यपरिष्टुता ॥५०॥

२२८ गम्भीराङ्गी—गहराईसे युक्त अथवा गहनस्वरूपवाली, २२९ गुणमयी—त्रिगुणात्मिका प्रकृतिरूपा अथवा सर्वज्ञता आदि गुणोंसे युक्त, २३० गतातङ्का—भयरहित अथवा अपने पास आनेवालोंके संसार-भयको निवृत्त करनेवाली, २३१ गतिप्रिया—निरन्तर गमन जिन्हें प्रिय है अथवा जो गति अर्थात् ज्ञानको प्रिय मानती हैं, २३२ गणनाथाम्बिका—गणेशजीकी माता, २३३ गीता—भगवद्गीतास्वरूपा, २३४ गद्यपद्यपरिष्टुता—गद्य-पद्यमय स्तोत्रोंसे जिनकी स्तुति की जाती है ॥ ५० ॥

गान्धारी गर्भशमनी गतिभ्रष्टगतिप्रदा ।
गोमती गुह्यविद्या गौर्गोप्त्री गगनगामिनी ॥५१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२३५ गान्धारी–पृथ्वीको धारण करनेवाली वाराहशक्तिस्वरूपा अथवा धृतराष्ट्रपत्नीस्वरूपा, २३६ गर्भशमनी–मुक्ति प्रदान करके गर्भवासके कष्टको दूर करनेवाली, २३७ गतिभ्रष्टगतिप्रदा–गतिभ्रष्टों—पतितोंको भी सद्गति प्रदान करनेवाली, २३८ गोमती–द्वारका अथवा नैमिषारण्यमें स्थित गोमतीनदीस्वरूपा, २३९ गुह्यविद्या–ब्रह्मविद्या, २४० गौः–पृथ्वीस्वरूपा अथवा कामधेनुरूपिणी, २४१ गोप्त्री–सद्गति प्रदान करके सबकी रक्षा करनेवाली, २४२ गगनगामिनी–आकाशमें बहनेवाली ॥ ५१ ॥

गोत्रप्रवर्द्धिनी गुण्या गुणातीता गुणाग्रणीः ।
गुहाम्बिका गिरिसुता गोविन्दाङ्घ्रिसमुद्भवा॥५२॥

२४३ गोत्रप्रवर्द्धिनी–पर्वतोंसे निर्झर आदिका जल पाकर बढ़नेवाली अथवा अपने भक्तोंका गोत्र (वंश) बढ़ानेवाली, २४४ गुण्या–उत्तम गुणोंसे युक्त, २४५ गुणातीता–तीनों गुणोंसे परे, २४६ गुणाग्रणीः–सद्गुणोंके कारण अग्रगण्य, २४७ गुहाम्बिका–स्कन्दकी माता, २४८ गिरिसुता–हिमवान्‌की पुत्री, २४९ गोविन्दाङ्घ्रिसमुद्भवा–श्रीविष्णुके चरणोंसे प्रकट हुई ॥ ५२ ॥

गुणनीयचरित्रा च गायत्री गिरिशप्रिया ।
गूढरूपा गुणवती गुर्वी गौरववर्द्धिनी ॥५३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२५० गुणनीयचरित्रा—प्रशंसा या गणना करने योग्य उत्तम चरित्रवाली, २५१ गायत्री—अपना गुणगान करने-वालेकी रक्षा करनेवाली अथवा गायत्रीदेवीस्वरूपा, २५२ गिरिशप्रिया—भगवान् शिवकी वल्लभा, २५३ गूढ-रूपा—छिपे हुए दिव्यस्वरूपवाली, २५४ गुणवती—शान्ति आदि उत्तम गुणोंसे युक्त, २५५ गुर्वी गौरवमयी, २५६ गौरववर्द्धिनी—महत्त्व बढ़ानेवाली अथवा स्वयं ही गौरवसे बढ़नेवाली ॥ ५३ ॥

ग्रहपीडाहरा गुंद्रा गरघ्नी गानवत्सला ।
घर्महन्त्री घृतवती घृततुष्टिप्रदायिनी ॥५४॥

२५७ ग्रहपीडाहरा—अनिष्ट स्थानोंमें स्थित ग्रहोंकी पीड़ा दूर करनेवाली, २५८ गुंद्रा—'गु' अर्थात् अविद्याका द्रावण—नाश करनेवाली, २५९ गरघ्नी—विषका प्रभाव दूर करनेवाली, २६० गानवत्सला—संगीतप्रिया, २६१ घर्महन्त्री—घामका कष्ट निवारण करनेवाली, २६२ घृतवती—घीके समान गुणकारक जलवाली, २६३ घृततुष्टिप्रदायिनी—अपने जलसे ही घीके समान संतोष देनेवाली ॥ ५४ ॥

घण्टारवप्रिया घोराघौघविध्वंसकारिणी ।
घ्राणतुष्टिकरी घोषा घनानन्दा घनप्रिया ॥५५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२६४ घण्टारवप्रिया—घण्टानादसे प्रसन्न होनेवाली, २६५ घोराघौघविध्वंसकारिणी—भयंकर पापराशिका विनाश करनेवाली, २६६ घ्राणतुष्टिकरी—घ्राणेन्द्रियको संतुष्ट करनेवाली, २६७ घोषा—अपने प्रवाह और तरङ्गोंके द्वारा कल-कल शब्द करनेवाली, २६८ घनानन्दा- घनीभूत आनन्दकी राशि अथवा आकाशगङ्गामें स्थित जलसे मेघोंको आनन्द देनेवाली, २६९ घनप्रिया—आकाशगङ्गारूपसे मेघोंको प्रिय लगनेवाली ॥ ५५ ॥

घातुका घूर्णितजला घृष्टपातकसंततिः ।
घटकोटिप्रपीतापा घटिताशेषमङ्गला ॥५६॥

२७० घातुका—पाप एवं अज्ञानका नाश करनेवाली, २७१ घूर्णितजला—भँवरयुक्त जलवाली, २७२ घृष्टपातकसंततिः—पातक-परम्पराको नष्ट कर देनेवाली, २७३ घटकोटिप्रपीतापा—जिसके करोड़ों घड़े जल नित्य पीये जाते हैं, २७४ घटिताशेषमङ्गला—सम्पूर्ण मङ्गल करनेवाली ॥ ५६ ॥

घृणावती घृणिनिधिर्घस्मरा घूकनादिनी ।
घुसृणापिञ्जरतनुर्घर्घरा घर्घरस्वना ॥५७॥

२७५ घृणावती—दयालु, २७६ घृणिनिधिः—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizaqtion by eGangotri

जलका भंडार या उद्गम २७७ घस्मरा–प्रवाहके द्वारा सब कुछ भक्षण (उदरस्थ) करनेवाली, २७८ घूकनादिनी–तटपर उलूक और वक आदि पक्षियोंके शब्दसे युक्त, २७९ घुसृणापिञ्जरतनुः–आधिदैविकरूपमें ,केशर आदिसे चर्चित होनेके कारण तथा स्नान करते समय देवाङ्गनाओं आदि-के अङ्गोंकी केसर धुल जानेसे प्रवाहरूपमें भी किंचित् पीले अङ्गोंवाली, २८० घर्घरा–घाघरा नदीके मिल जानेपर घाघरा-नदी-स्वरूप, २८१ घर्घरस्वना–घर्घर बन जानेवाली ध्वनिसे युक्त ॥ ५८ ॥

चन्द्रिका चन्द्रकान्ताम्बुश्चञ्चदापा चलद्युतिः ।
चिन्मयी चितिरूपा च चन्द्रायुतशतानना ॥५८॥

२८२ चन्द्रिका–चन्द्रप्रभास्वरूपा, २८३ चन्द्र-कान्ताम्बुः–चन्द्रमाके समान श्वेत जलवाली अथवा चन्द्र-कान्तमणिके समान निर्मल जलवाली, २८४ चञ्चदापा–चञ्चल जलवाली, २८५ चलद्युतिः–विद्युत्स्वरूपा, २८६ चिन्मयी–चिन्मय (अप्राकृत) विग्रहवाली ब्रह्मद्रवरूपा २८७ चितिरूपा–चैतन्य स्वभावा, २८८ चन्द्रायुत-शतानना–दस सहस्र चन्द्रमाओंके समान मनोरम मुखवाली ५८

चाम्पेयलोचना चारुश्चार्वङ्गी चारुगामिनी ।
चार्या चारित्रनिलया चित्रकृच्चित्ररूपिणी ॥५९॥

२८९ चाम्पेयलोचना–चम्पाके फूलोंके समान सुन्दर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेत्रोंवाली, २९० चारुः—मनोहारिणी, २९१ चार्वङ्गी—परम सुन्दर अङ्गोंवाली, २९२ चारुगामिनी—मनोहर चालसे चलनेवाली, २९३ चार्या—चलकर पहुँचने—शरण लेनेयोग्य, २९४ चारित्र निलया—सदाचारकी आधाररूपा २९५ चित्रकृत्—बड़े-से-बड़े पापियोंको तारनेका अद्भुत कार्य करनेवाली, २९६ चित्ररूपिणी—विचित्र रूपवाली ॥ ५९ ॥

चम्पूश्चन्दनशुच्यम्बुश्चर्चनीया चिरंस्थिरा ।
चारुचम्पकमालाढ्या चमिताशेषदुष्कृता ॥६०॥

२९७ चम्पूः—गद्य-पद्यमय काव्यस्वरूपा अथवा चम्पा-पुष्पके समान रंगवाली, २९८ चन्दनशुच्यम्बुः—चन्दनके समान पवित्र एवं सुगन्धित जलवाली, २९९ चर्चनीया—पूजन अथवा कीर्तन करने योग्य, ३०० चिरंस्थिरा—चिरकालतक स्थिर रहनेवाली, ३०१ चारुचम्पकमालाढ्या—मनोहर चम्पा-पुष्पोंकी मालासे सुशोभित, ३०२ चमिताशेषदुष्कृता—समस्त पापोंको पी जानेवाली ॥ ६० ॥

चिदाकाशवहा चिन्त्या चञ्चच्चामरवीजिता ।
चोरिताशेषवृजिना चरिताशेषमण्डला ॥६१॥

३०३ चिदाकाशवहा—चिदाकाशरूप ब्रह्मको प्राप्त करानेवाली, अथवा ब्रह्मरूप जलको बहानेवाली, ३०४ चिन्त्या—चिन्तन करने योग्य, ३०५ चञ्चत्—देदीप्यमान, ३०६ चामरवीजिता—डुलाये जाते हुए चँवरोंसे जिन्हें हवा-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की जाती है ३०७ चोरिताशेषवृजिना—समस्त पापोंको हर लेनेवाली, ३०८ चरिताशेषमण्डला—ब्रह्मलोक-पर्यन्त समस्त मण्डलों (लोकों) में विचरनेवाली ॥ ६१ ॥

छेदिताखिलपापौघा छद्मघ्नी छलहारिणी ।
छन्नत्रिविष्टपतला छोटिताशेषबन्धना ॥६२॥

३०९ छेदिताखिलपापौघा—समस्त पापराशिका उच्छेद करनेवाली, ३१० छद्मघ्नी—कपट, अज्ञान अथवा छद्म नामक विशेष रोगका नाश करनेवाली, ३११ छलहारिणी—छलको हर लेनेवाली, ३१२ छन्नत्रिविष्टपतला—स्वर्गलोकको व्याप्त करनेवाली, ३१३ छोटिताशेषबन्धना—समस्त बन्धनोंको छुड़ा देनेवाली ॥ ६२ ॥

छुरितामृतधारौघा छिन्नैनाश्छन्दगामिनी ।
छत्रीकृतमरालौघा छटीकृतनिजामृता ॥६३॥

३१४ छुरितामृतधारौघा—अमृतमय जलकी धारा बहानेवाली, ३१५ छिन्नैनाः—पापोंका उच्छेद करनेवाली, ३१६ छन्दगामिनी—स्वच्छन्द चलनेवाली, ३१७ छत्रीकृत-मरालौघा—हंसोंके समूहको श्वेतछत्रके समान धारण करनेवाली ३१८ छटीकृतनिजामृता—अपने स्वरूपभूत जलको विशेष शोभाके रूपमें धारण करनेवाली ॥ ६३ ॥

जाह्नवी ज्या जगन्माता जप्या जङ्घालवीचिका ।
जया जनार्दनप्रीता जुषणीया जगद्धिता ॥६४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३१९ जाह्नवी–जह्नुकी पुत्री, ३२० ज्या–पापरूपी मृगको भयभीत करनेके लिये धनुषकी प्रत्यञ्चाके समान, ३२१ जगन्माता–विश्वजननी, ३२२ जप्या–जप करने योग्य नामोंवाली, ३२३ जह्नालवींचिका–वेगसे बहनेवाली तरङ्गोंसे युक्त ३२४ जया–विजयिनी अथवा पार्वतीकी सखी जया, ३२५ जनार्दनप्रीता–भगवान् विष्णुसे प्रीति करनेवाली, ३२६ जुषणीया–देवता, ऋषि और मनुष्योंके द्वारा सेवन करने योग्य, ३२७ जगद्धिता–जगत्का कल्याण करनेवाली ॥६४॥

जीवनं जीवनप्राणा जगज्ज्येष्ठा जगन्मयी ।
जीवजीवातुलतिका जन्मिजन्मनिबर्हिणी ॥६५॥

३२८ जीवनम्–जीवनहेतु, ३२९ जीवनप्राणा–जीवनरूप जलसे जगत्को प्राणशक्तिसे युक्त करनेवाली अथवा जीवनप्राणस्वरूपा, ३३० जगत्–विश्वरूपा अथवा सर्वत्र व्यापक, ३३१ ज्येष्ठा–आद्याशक्ति, ३३२ जगन्मयी–जगत्स्वरूपा, ३३३ जीवजीवातुलतिका–प्राणियोंके लिये संजीवन औषधरूपा, ३३४ जन्मिजन्मनिबर्हिणी–जन्मधारी प्राणियोंके जन्म-मरणका क्लेश दूर करनेवाली ॥ ६५ ॥

जाड्यविध्वंसनकरी जगद्योनिर्जलाविला ।
जगदानन्दजननी जलजा जलजेक्षणा ॥६६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३३५ जाड्यविध्वंसनकरी—जडता—अज्ञानका विनाश करनेवाली, ३३६ जगद्योनिः—जगत्की कारणभूता—प्रकृति-स्वरूपा, ३३७ जलाविला—वर्षाके जलसे कुछ मलिन-सी दीखनेवाली, ३३८ जगदानन्दजननी—जगत्के लिये आनन्द-की सृष्टि करनेवाली, ३३९ जलजा—कमलका उत्पत्ति-स्थान, ३४० जलजेक्षणा—कमलसदृश अथवा कमलस्वरूप नेत्रोंवाली ॥ ६६ ॥

जनलोचनपीयूषा जटातटविहारिणी ।
जयन्ती जंजपूकघ्नी जनितज्ञानविग्रहा ॥६७॥

३४१ जनलोचनपीयूषा—जीवमात्रके नेत्रोंको अमृतके समान सुखद प्रतीत होनेवाली, ३४२ जटातटविहारिणी—भगवान् शंकरके जटा-प्रदेशमें विहार करनेवाली, ३४३ जयन्ती—विजयशीला, ३४४ जंजपूकघ्नी—पापोंका नाश करनेवाली, ३४५ जनितज्ञानविग्रहा—जिन्होंने अपने ज्ञानमय शरीरको स्वेच्छासे प्रकट किया है ॥ ६७ ॥

झल्लरीवाद्यकुशला झलज्झालजलावृता ।
झिण्टीशवन्द्या झांकारकारिणी झर्झरावती ॥६८॥

३४६ झल्लरीवाद्यकुशला—अपने जलप्रवाहके द्वारा झालर की-सी ध्वनि प्रकट करनेमें कुशल अथवा झालर बजानेमें निपुण, ३४७ झलज्झालजलावृता—झलझल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्वनि करनेवाले जलसे आच्छादित, ३४८ झिण्टीशावन्द्या-झारखण्डमें पूजित भगवान् शिवके द्वारा वन्दनीया, ३४९ झंकारकारिणी-झंकारका शब्द करनेवाली, ३५० झर्झरावती- झर-झर शब्दसे युक्त ॥ ६८ ॥

टीकिताशेषपाताला टङ्किकैनोऽद्रिपाटने ।
टंकारनृत्यत्कल्लोला टीकनीयमहातटा ॥६९॥

३५१ टीकिताशेषपाताला—भोगवती गङ्गाके रूपमें समस्त पाताललोकमें प्रवाहित होनेवाली, ३५२ टङ्किकैनोऽद्रिपाटने—पापरूपी पर्वतको विदीर्ण करनेमें टाँकी (शस्त्रविशेष)के समान, ३५३ टंकारनृत्यत्कल्लोला—जिसकी चञ्चल लहरें टंकार-शब्दके साथ नृत्य सी करती हैं, ३५४ टीकनीयमहातटा—जिसका विशाल तटप्रान्त सबके सेवन करने योग्य है ॥ ६९ ॥

डम्बरप्रवहा डीनराजहंसकुलाकुला ।
डमड्डमरुहस्ता च डामरोक्तमहाण्डका ॥७०॥

३५५ डम्बरप्रवहा—बड़े शब्दके साथ बहनेवाली, ३५६ डीनराजहंसकुलाकुला—उड़ते हुए राज हंसोंके समुदायसे व्याप्त, ३५७ डमड्डमरुहस्ता—हाथमें डिमडिम शब्द करनेवाला डमरू लिये रहनेवाली, ३५८ डामरोक्तमहाण्डका-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डामरकल्पमें प्रतिपादित विराट् स्वरूपवाली ॥ ७० ॥

ढौकिताशेषनिर्वाणा ढक्कानादचलज्जला ।
ढुण्ढिविघ्नेशजननी ढणड्ढुणितपातका ॥७१॥

३५९ढौकिताशेषनिर्वाणा—अपने भक्तोंको सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सार्ष्टि तथा सायुज्यरूप सभी प्रकारके मोक्षकी प्राप्ति करानेवाली, ३६० ढक्कानादचलज्जला—डंकेकी आवाजके समान ध्वनि करनेवाले प्रवाहशील जलवाली, ३६१ ढुण्ढिविघ्नेशजननी—ढुण्ढिराज गणेशकी माता, ३६२ ढणड्ढुणितपातका—ढन् ढन् शब्दके साथ पातकोंको धक्के देकर ढकेलनेवाली ॥ ७१ ॥

तर्पणी तीर्थतीर्था च त्रिपथा त्रिदशेश्वरी ।
त्रिलोकगोप्त्री तोयेशी त्रैलोक्यपरिवन्दिता ॥७२॥

३६३ तर्पणी—सबको तृप्त करनेवाली अथवा जिनके जलसे सभी तर्पण करते हैं, ३६४ तीर्थतीर्था—तीर्थोंके लिये भी तीर्थरूपा, ३६५ त्रिपथा—स्वर्ग, भूतल और पाताल—तीन मार्गोंसे बहनेवाली, ३६६—त्रिदशेश्वरी—देवताओंकी स्वामिनी, ३६७ त्रिलोकगोप्त्री—तीनों लोकोंकी रक्षा करनेवाली, ३६८ तोयेशी—जल अथवा उसकी अधिष्ठात्री देवियों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की भी स्वामिनी, ३६९ त्रैलोक्यपरिवन्दिता–तीनों लोकोंके द्वारा सब ओरसे वन्दित ॥ ७२ ॥

तापत्रितयसंहर्त्री तेजोबलविवर्धिनी ।
त्रिलक्ष्या तारणी तारा तारापतिकरार्चिता ॥७३॥

३७० तापत्रितयसंहर्त्री–आध्यात्मिक आदि तीनों तापोंका संहार करनेवाली, ३७१ तेजोबलविवर्धिनी–तेज और बलको बढ़ानेवाली, ३७२ त्रिलक्ष्या–जिनका स्वरूप तीनों लोकोंमें लक्षित होता है, ३७३ तारणी–सबको तारनेवाली, ३७४ तारा–तारनेवाली, प्रणवरूपा अथवा नक्षत्ररूपा, ३७५ तारापतिकरार्चिता–चन्द्रमाकी किरणों-द्वारा पूजित अथवा चन्द्रमाद्वारा अपने हाथों पूजित ॥७३॥

त्रैलोक्यपावनीपुण्या तुष्टिदा तुष्टिरूपिणी ।
तृष्णाच्छेत्री तीर्थमाता त्रिविक्रमपदोद्भवा ॥७४॥

३७६ त्रैलोक्यपावनी पुण्या–तीनों लोकोंको पवित्र करनेवाली नदियोंमें सबसे अधिक पुण्यमयी, ३७७ तुष्टिदा–सुख एवं संतोष देनेवाली, ३७८ तुष्टिरूपिणी–संतोषवृत्ति रूपा, ३७९ तृष्णाच्छेत्री–तृष्णाका उच्छेद करनेवाली, ३८० तीर्थमाता–तीर्थोंकी माता, ३८१ त्रिविक्रमपदोद्भवा–भगवान् वामनके चरण पखारनेसे प्रकट हुई ७४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तपोमयी तपोरूपा तपःस्तोमफलप्रदा ।
त्रैलोक्यव्यापिनी तृप्तिस्तृप्तिकृत्तत्त्वरूपिणी ॥७५॥

३८२ तपोमयी—इन्द्रिय और मनकी एकाग्रतारूपा, ३८३ तपोरूपा—कृच्छ्र-चान्द्रायणादि व्रत एवं तपस्या-स्वरूपा, ३८४ तपःस्तोमफलप्रदा—तपःसमुदायका फल देनेवाली, ३८५ त्रैलोक्यव्यापिनी—तीनों लोकोंमें व्यापक, ३८६ तृप्तिः—तृप्तिस्वरूपा, ३८७ तृप्तिकृत्—संतुष्ट करनेवाली, ३८८ तत्त्वरूपिणी—चौबीस तत्त्वरूपा अथवा परमार्थ-रूपिणी ॥ ७५ ॥

त्रैलोक्यसुन्दरी तुर्या तुर्यातीतफलप्रदा ।
त्रैलोक्यलक्ष्मीस्त्रिपदी तथ्या तिमिरचन्द्रिका ॥७६॥

३८९ त्रैलोक्यसुन्दरी—तीनों लोकोंमें सर्वाधिक सौन्दर्यवाली, ३९० तुर्या—जाग्रत् आदि तीन अवस्थाओंसे परे, ३९१ तुर्यातीतफलप्रदा—ब्रह्मपदरूप तुरीयातीत फलको देनेवाली, ३९२ त्रैलोक्यलक्ष्मीः—त्रिभुवनकी सम्पत्तिरूपा, ३९३ त्रिपदी—तीनों लोकोंमें जिनका स्थान है, ३९४ तथ्या—तीनों कालोंमें अबाधित, परमार्थरूपा, ३९५ तिमिरचन्द्रिका—अज्ञानरूपी अन्धकारको दूर करनेके लिये चाँदनीके समान ॥ ७६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेजोगर्भा तपस्सारा त्रिपुरारिशिरोगृहा ।
त्रयीस्वरूपिणी तन्वी तपनाङ्गजभीतिनुत् ॥७७॥

३९६ तेजोगर्भा—भगवान् शंकरके तेजोमय वीर्यको गर्भमें धारण करनेवाली, ३९७ तपस्सारा—तपस्याकी सारभूता, ३९८ त्रिपुरारिशिरोगृहा—भगवान् शंकरके मस्तकरूपी गृहमें निवास करनेवाली, ३९९ त्रयीस्वरूपिणी—तीनों वेद जिनके स्वरूप हैं, ४०० तन्वी—प्रपञ्चका विस्तार करनेवाली अथवा सुन्दरी, कृशाङ्गी, ४०१ तपनाङ्गजभीतिनुत्—सूर्यपुत्र यमका भय दूर करनेवाली ॥ ७७ ॥

तरिस्तरणिजामित्रं तर्पिताशेषपूर्वजा ।
तुलाविरहिता तीव्रपापतूलतनूनपात् ॥७८॥

४०२ तरिः—संसार-सागरसे पार होनेके लिये नौकारूपा, ४०३ तरणिजामित्रम्—सूर्यपुत्र यमके अधिकारमें बाधा डालनेके कारण उनके लिये अमित्ररूपा अथवा सूर्यकन्या यमुनाकी सखी, ४०४ तर्पिताशेषपूर्वजा—राजा भगीरथके अथवा समस्त जनसमुदायके सम्पूर्ण पूर्वजोंको तृप्त करनेवाली, ४०५ तुलाविरहिता—तुलनारहित, ४०६ तीव्रपापतूलतनूनपात्—भयंकर पापरूपी रूईके ढेरको जलानेके लिये अग्निके समान ॥ ७८ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दारिद्र्यदमनी दक्षा दुष्प्रेक्षा दिव्यमण्डना ।
दीक्षावती दुरावाप्या द्राक्षामधुरवारिभृत् ॥७९॥

४०७ दारिद्र्यदमनी-दुर्गति एवं दरिद्रताका दमन करनेवाली, ४०८ दक्षा-जगत्का उद्धार करनेमें कुशल, ४०९ दुष्प्रेक्षा-भक्तिभावके विना जिनका दर्शन पाना अत्यन्त कठिन है, ४१० दिव्यमण्डना-अलौकिक आभूषणोंसे विभूषित, ४११ दीक्षावती-जिन्होंने लोकहित एवं जीवोंके उद्धारकी दीक्षा ले रखी हो ४१२ दुरावाप्या-दुर्लभा, ४१३ द्राक्षामधुरवारिभृत्-मुनक्काके समान मधुर जल धारण करनेवाली ॥ ७९ ॥

दर्शितानेककुतुका दुष्टदुर्जयदुःखहृत् ।
दैन्यहृद् दुरितघ्नी च दानवारिपदाब्जजा ॥८०॥

४१४ दर्शितानेककुतुका-अपने जलकल्लोलोंके द्वारा अनेक प्रकारके कौतुक दिखानेवाली, ४१५ दुष्टदुर्जयदुःखहृत्-दुष्टोंके भी दुर्जय दुःखोंको हर लेनेवाली, ४१६ दैन्यहृत्-दीनताको दूर करनेवाली, ४१७ दुरितघ्नी-पापोंका नाश करनेवाली, ४१८ दानवारिपदाब्जजा-दैत्यारि श्रीविष्णुके चरणारविन्दोंसे प्रकट हुई ॥ ८० ॥

दंदशूकविषघ्नी च दारिताघौघसंततिः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्रुता देवद्रुमच्छन्ना दुर्वाराघविघातिनी ॥८१॥

४१९ दंदशूकविषघ्नी–सर्पोंके विषका नाश करने-वाली, ४२० दारिताघौघसंततिः–पापराशिकी परम्पराको विदीर्ण करनेवाली, ४२१ द्रुता–वेगसे बहनेवाली, ४२२ देवद्रुमच्छन्ना–संतान, कल्पवृक्ष, मन्दार, पारिजात तथा हरिचन्दन—इन पाँच जातिके देववृक्षोंसे आच्छादित, ४२३ दुर्वाराघविघातिनी–जिन्हें दूर करना कठिन है, ऐसे पातकोंका भी नाश करनेवाली ॥ ८१ ॥

दमग्राह्या देवमाता देवलोकप्रदर्शिनी ।
देवदेवप्रिया देवी दिक्पालपददायिनी ॥८२॥

४२४ दमग्राह्या–मन और इन्द्रियोंके संयमसे वशमें होनेवाली, ४२५ देवमाता–अदितिस्वरूपा, ४२६ देवलोक-प्रदर्शिनी–अपने उपासकोंको स्वर्ग आदि दिव्यलोकोंकी प्राप्ति करानेवाली, ४२७ देवदेवप्रिया–देवाधिदेव महादेवकी प्रिया, ४२८ देवी–द्युतिमती, प्रकाशस्वरूपा, ४२९ दिक्पालपददायिनी–इन्द्र आदि दिक्पालोंके पदकी प्राप्ति करानेवाली ॥ ८२ ॥

दीर्घायुःकारिणी दीर्घा दोग्ध्री दूषणवर्जिता ।
दुग्धाम्बुवाहिनी दोह्या दिव्या दिव्यगतिप्रदा ॥८३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४३० दीर्घायुःकारिणी—आयुको लंबी करनेवाली, ४३१ दीर्घा—विशाल, अनन्त, ४३२ दोग्ध्री—धर्म, अर्थ, काम और मोक्षको देनेवाली, ४३३ दूषणवर्जिता—दोषरहित, ४३४ दुग्धाम्बुवाहिनी—दूधके समान स्वच्छ, स्वादिष्ट एवं गुणकारी जल बहानेवाली, ४३५ दोह्या—इच्छानुसार दोहन करनेयोग्य—कामधेनुरूपा, ४३६ दिव्या—अलौकिक स्वरूपवाली, ४३७ दिव्यगतिप्रदा—दिव्य गति प्रदान करनेवाली ॥ ८३ ॥

द्युनदी दीनशरणं देहिदेहनिवारिणी ।
द्राघीयसी दाघहन्त्री दितपातकसंततिः ॥८४॥

४३८ द्युनदी—स्वर्गलोककी गङ्गा, ४३९ दीनशरणम्—दीनों—महापातकियोंको भी शरण देकर उनका उद्धार करनेवाली, ४४० देहिदेहनिवारिणी—देहधारियोंके देहका निवारण करनेवाली (उन्हें मुक्ति देकर जन्म-मृत्युसे रहित करनेवाली), ४४१ द्राघीयसी—अतिशय विशाल, ४४२ दाघहन्त्री—दाहकी शान्ति करनेवाली, ४४३ दितपातकसंततिः—पाप-परम्पराका खण्डन करनेवाली ॥८४॥

दूरदेशान्तरचरी दुर्गमा देववल्लभा ।
दुर्वृत्तघ्नी दुर्विगाह्या दयाधारा दयावती ॥८५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४४४ दूरदेशान्तरचरी–दूर देशोंमें विचरनेवाली, ४४५ दुर्गमा–दुर्लभा, ४४६ देववल्लभा–देवताओंकी इष्टदेवी अथवा देव अर्थात् विष्णु एवं शिवकी प्रिया, ४४७ दुर्वृत्तघ्नी–दुष्टों अथवा पापोंका नाश करनेवाली, ४४८ दुर्विगाह्या–जिसमें स्नान करनेका अवसर बहुत कठिनाईसे मिलता है, ४४९ दयाधारा–करुणाकी आश्रय-भूता, ४५० दयावती–दयालु-स्वभावा ॥ ८५ ॥

दुरासदा दानशीला द्राविणी द्रुहिणस्तुता ।
दैत्यदानवसंशुद्धिकर्त्री दुर्बुद्धिहारिणी ॥८६॥

४५१ दुरासदा–दुर्लभ अथवा दुर्बोध, ४५२ दान-शीला–स्वभावतःचारों पुरुषार्थोंको देनेवाली, ४५३ द्राविणी–बड़े वेगसे प्रवाहित होनेवाली अथवा पाप-पुञ्जको भगानेवाली, ४५४ द्रुहिणस्तुता–ब्रह्माजीके द्वारा प्रशंसित, ४५५ दैत्यदानवसंशुद्धिकर्त्री–दैत्यों और दानवोंको भी भलीभाँति शुद्ध करनेवाली, ४५६ दुर्बुद्धिहारिणी–खोटी बुद्धिका निवारण करनेवाली ॥ ८६ ॥

दानसारा दयासारा द्यावाभूमिविगाहिनी ।
दृष्टादृष्टफलप्राप्तिर्देवतावृन्दवन्दिता ॥८७॥

४५७ दानसारा–दान देना जिनका सार-तत्त्व है,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४५८ दयासारा—जिनमें स्वभावतः दया भरी हो, ४५९ द्यावाभूमिविगाहिनी—आकाश और भूमिमें समान रूपसे विचरण करनेवाली, ४६० दृष्टादृष्टफलप्राप्तिः—लौकिक और पारलौकिक फलकी प्राप्तिमें हेतु, ४६१ देवतावृन्दवन्दिता—देवसमुदायके द्वारा नमस्कृत ॥ ८७ ॥

दीर्घव्रता दीर्घदृष्टिर्दीप्ततोया दुरालभा ।
दण्डयित्री दण्डनीतिर्दुष्टदण्डधरार्चिता ॥८८॥

४६२ दीर्घव्रता—लोकोपकारका चिरस्थायी व्रत धारण करनेवाली, ४६३ दीर्घदृष्टिः—जिनकी दृष्टि अर्थात् बुद्धि दीर्घ—दूरतककी बात सोच लेनेवाली हो, अथवा अपरिच्छिन्न ज्ञानस्वरूपा, ४६४ दीप्ततोया—प्रकाशमान जलवाली, ४६५ दुरालभा—दुर्लभा, ४६६ दण्डयित्री—पापोंको दण्ड देनेवाली, ४६७ दण्डनीतिः—दण्डनीति नामकी विद्यास्वरूपा, ४६८ दुष्टदण्डधरार्चिता—दुष्टोंको दण्ड देनेवाले यमराजके द्वारा पूजित ॥ ८८ ॥

दुरोदरघ्नी दावार्चिर्द्रवद्द्रव्यैकशेवधिः ।
दीनसंतापशमनी दात्री दवथुवैरिणी ॥८९॥

४६९ दुरोदरघ्नी—जुआ आदि बुरे आचरणोंको नाश करनेवाली, ४७० दावार्चिः—पापरूपी वनके लिये दावानलकी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्वालाके समान; ४७१ द्रवत्–सर्वव्यापक तत्त्व; ४७२ द्रव्यैकशेवधिः–सम्पूर्ण द्रव्योंकी एकमात्र निधि; ४७३ दीनसंतापशमनी–दीनों—संसारदुःखसे दुखी जीवोंके आध्यात्मिक आदि तापोंका निवारण करनेवाली; ४७४ दात्री–चारों पुरुषार्थोंको देनेवाली; ४७५ दवथु-वैरिणी–संसार-भयसे होनेवाले संतापको दूर करनेवाली ८९

दरीविदारणपरा दान्ता दान्तजनप्रिया ।
दारिताद्रितटा दुर्गा दुर्गारण्यप्रचारिणी ॥९०॥

४७६ दरीविदारणपरा–पर्वतोंकी गुफाओंको विदीर्ण करनेवाली; ४७७ दान्ता–इन्द्रियोंको वशमें रखनेवाली; ४७८ दान्तजनप्रिया–जितेन्द्रिय पुरुषोंको प्यार करनेवाली; ४७९ दारिताद्रितटा–पर्वतोंके पार्श्वभागको विदीर्ण करके बहनेवाली, ४८० दुर्गा–दुर्ग दैत्यका वध करनेवाली देवी; ४८१ दुर्गारण्यप्रचारिणी–दुर्गम वनमें विचरनेवाली ९०

धर्मद्रवा धर्मधुरा धेनुर्धीरा धृतिर्ध्रुवा ।
धेनुदानफलस्पर्शा धर्मकामार्थमोक्षदा ॥ ९१ ॥

४८२ धर्मद्रवा–धर्मस्वरूपवाला है जल जिसका; ४८३ धर्मधुरा–धर्मका आधार अथवा उत्कृष्ट धर्म-स्वरूपा; ४८४ धेनुः–कामधेनुस्वरूपा; ४८५ धीरा–

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धैर्यशालिनी अथवा विदुषी, ४८६ धृतिः—धारणाशक्तिरूपा, ४८७ ध्रुवा—नित्या, ४८८ धेनुदानफलस्पर्शा—जिनके जलका स्पर्श गोदानका फल देनेवाला है, ४८९ धर्मकामार्थमोक्षदा—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इन चारों पुरुषार्थोंको देनेवाली ॥ ९१ ॥

धर्मोर्मिवाहिनी धुर्या धात्री धात्रीविभूषणम् ।
धर्मिणी धर्मशीला च धन्विकोटिकृतावना ॥ ९२ ॥

४९० धर्मोर्मिवाहिनी—धर्मरूपी लहरोंको धारण करनेवाली, ४९१ धुर्या—श्रेष्ठा, ४९२ धात्री—धारण-पोषण करनेवाली अथवा माता, ४९३ धात्रीविभूषणम्—पृथ्वीकी अलंकाररूपा, ४९४ धर्मिणी—पुण्यवती, ४९५ धर्मशीला—स्वभावतः धर्मका आचरण करनेवाली, ४९६ धन्विकोटिकृतावना—कोटि-कोटि धनुर्धर वीरोंके द्वारा रक्षित ॥ ९२ ॥

ध्यातृपापहरा ध्येया धावनी धूतकल्मषा ।
धर्मधारा धर्मसारा धनदा धनवर्द्धिनी ॥ ९३ ॥

४९७ ध्यातृपापहरा—ध्यान करनेवाले पुरुषके सब पापोंको हर लेनेवाली, ४९८ ध्येया—ध्यान करनेयोग्य, ४९९ धावनी—धोनेवाली, पवित्र करनेवाली, ५०० धूत-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कल्मषा—पापोंको धो डालनेवाली, ५०१ धर्मधारा—धर्मको धारण करनेवाली, ५०२ धर्मसारा—सब धर्मोंकी सारभूता, ५०३ धनदा—धन देनेवाली, ५०४ धनवर्द्धिनी—धनको बढ़ानेवाली ॥ ९३ ॥

धर्माधर्मगुणच्छेत्री धत्तूरकुसुमप्रिया ।
धर्मेशी धर्मशास्त्रज्ञा धनधान्यसमृद्धिकृत् ॥ ९४ ॥

५०५ धर्माधर्मगुणच्छेत्री—धर्माधर्मके बन्धनको काटनेवाली ब्रह्मविद्यास्वरूपा, ५०६ धत्तूरकुसुमप्रिया—धतूरके फूलमें रुचि रखनेवाली, ५०७ धर्मेशी—धर्मकी स्वामिनी, ५०८ धर्मशास्त्रज्ञा—धर्मशास्त्रको जाननेवाली, ५०९ धनधान्यसमृद्धिकृत्—धन और धान्यको बढ़ानेवाली॥

धर्मलभ्या धर्मजला धर्मप्रसवधर्मिणी ।
ध्यानगम्यस्वरूपा च धरणी धातृपूजिता ॥ ९५ ॥

५१० धर्मलभ्या—धर्मसे प्राप्त होने योग्य, ५११ धर्मजला—धर्मस्वरूप जलवाली, ५१२ धर्मप्रसवधर्मिणी—धर्मकी जननी तथा धर्मनिष्ठ, ५१३ ध्यानगम्यस्वरूपा—ध्यानके द्वारा चिन्तन करने योग्यस्वरूपवाली, ५१४ धरणी—धारण करनेवाली, पृथ्वीरूपा, ५१५ धातृपूजिता—ब्रह्माजीके द्वारा पूजित ॥ ९५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धूर्धूर्जटिजटासंस्था धन्या धीर्धारणावती।
नन्दा निर्वाणजननी नन्दिनी नुन्नपातका ॥ ९६ ॥

५१६ धूः—पापोंको कम्पित करनेवाली, ५१७ धूर्जटिजटासंस्था—भगवान् शंकरकी जटामें वास करनेवाली, ५१८ धन्या—कृतार्थस्वरूपा, ५१९ धीः—बुद्धिस्वरूपा, ५२० धारणावती—धारणाशक्तिसे सम्पन्न; मेधास्वरूपा, ५२१ नन्दा—नन्दा नामकी गङ्गा अथवा जगत्को आनन्द देनेवाली, ५२२ निर्वाणजननी—परम शान्ति अथवा मोक्ष देनेवाली, ५२३ नन्दिनी—दूसरोंको प्रसन्न करनेवाली अथवा वशिष्ठकी धेनु, ५२४ नुन्नपातका—पातकोंको दूर भगा देनेवाली ॥ ९६ ॥

निषिद्धविघ्ननिचया निजानन्दप्रकाशिनी।
नभोऽङ्गणचरी नूतिर्नम्या नारायणी नुता ॥ ९७ ॥

५२५ निषिद्धविघ्ननिचया—विघ्नसमुदायका निवारण करनेवाली, ५२६ निजानन्दप्रकाशिनी—अपने स्वरूपभूत आनन्दको प्रकाशित करनेवाली, ५२७ नभोऽङ्गणचरी—आकाशरूप आँगनमें विचरनेवाली, ५२८ नूतिः—स्तुतिस्वरूपा, ५२९ नम्या—वन्दनीया, ५३० नारायणी—नारायणशक्तिस्वरूपा अथवा नारायणी (गण्डकी) नदीस्वरूपा,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५३१ नुता–ब्रह्मा और इन्द्र आदि देवताओंके द्वारा अभिनन्दिता ॥ ९७ ॥

निर्मला निर्मलाख्याना नाशिनी तापसम्पदाम् ।
नियता नित्यसुखदा नानाश्चर्यमहानिधिः ॥९८॥

५३२ निर्मला–संसाररूपी मलसे रहित, ५३३ निर्मलाख्याना–जिनकी माहात्म्यकथा अत्यन्त निर्मल है, ५३४ नाशिनी तापसम्पदाम्–संतापकी परम्पराका नाश करनेवाली, ५३५ नियता–नियमपूर्वक रहनेवाली अथवा एकरूपा, ५३६ नित्यसुखदा–सदा सुख देनेवाली, ५३७ नानाश्चर्यमहानिधिः–अनेक प्रकारके आश्चर्योंका भंडार ॥ ९८ ॥

नदी नदसरोमाता नायिका नाकदीर्घिका ।
नष्टोद्धरणधीरा च नन्दना नन्ददायिनी ॥ ९९ ॥

५३८ नदी–अव्यक्त शब्द करनेवाली सरिता, ५३९ नदसरोमाता–नदों और सरोवरोंकी जननी, ५४० नायिका–जीवोंको संसार-समुद्रसे पार ले जानेवाली अथवा सब नदियोंकी स्वामिनी, ५४१ नाकदीर्घिका–स्वर्गलोककी बावली, ५४२ नष्टोद्धरणधीरा–संसार-सागरमें गिरकर नष्ट होनेवाले जीवोंका उद्धार करनेमें दक्ष, ५४३ नन्दना–समृद्धि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देनेवाली, ५४४ नन्ददायिनी—आनन्द देनेवाली ॥ ९९ ॥

निर्णिक्ताशेषभुवना निस्सङ्गा निरुपद्रवा ।
निरालम्बा निष्प्रपञ्चा निर्णाशितमहामला ॥१००॥

५४५ निर्णिक्ताशेषभुवना—समस्त लोकोंको पवित्र करनेवाली, ५४६ निस्सङ्गा—आसक्तिरहित, ५४७ निरुपद्रवा—विघ्नरहित, ५४८ निरालम्बा—आधाररहित, अपनी ही महिमामें प्रतिष्ठित, ५४९ निष्प्रपञ्चा—प्रपञ्चसे परे स्थित, ५५० निर्णाशितमहामला—अज्ञानरूपी महामलका पूर्णतया नाश करनेवाली ॥ १०० ॥

निर्मलज्ञानजननी निःशेषप्राणितापहृत् ।
नित्योत्सवा नित्यतृप्ता नमस्कार्या निरञ्जना ॥१०१॥

५५१ निर्मलज्ञानजननी—विशुद्ध ज्ञानको प्रकट करनेवाली, ५५२ निःशेषप्राणितापहृत्—समस्त प्राणियोंका संताप हर लेनेवाली, ५५३ नित्योत्सवा—नित्य उत्सवयुक्त, ५५४ नित्यतृप्ता—अपने स्वरूपभूत आनन्दसे सदा संतुष्ट, ५५५ नमस्कार्या—नमस्कार करनेयोग्य, ५५६ निरञ्जना—अज्ञानरहित ॥ १०१ ॥

निष्ठावती निरातङ्का निर्लेपा निश्चलात्मिका ।
निरवद्या निरीहा च नीललोहितमूर्द्धगा ॥१०२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५५७ निष्ठावती–श्रद्धा एवं नियम-निष्ठासे युक्त, ५५८ निरातङ्का–भयरहित, ५५९ निर्लेपा–पाप आदिसे अलिप्त, शुद्धस्वरूपा, ५६० निश्चलात्मिका–स्थिर बुद्धि-वाली, ५६१ निरवद्या–निर्दोष, ५६२ निरीहा–चेष्टारहित, ५६३ नीललोहितमूर्द्धगा–भगवान् शिवके मस्तकपर विराजमान ॥ १०२ ॥

नन्दिभृङ्गिगणस्तुत्या नागा नन्दा नगात्मजा ।
निष्प्रत्यूहा नाकनदी निरयार्णवदीर्घनौः ॥१०३॥

५६४ नन्दिभृङ्गिगणस्तुत्या–नन्दी, भृङ्गी आदि शिवगणोंसे स्तुति की जाने योग्य, ५६५ नागा–नागस्वरूपा, ५६६ नन्दा–समृद्धिदायिनी, ५६७ नगात्मजा–गिरिराज हिमवान्‌की पुत्री, ५६८ निष्प्रत्यूहा–विघ्न-बाधाओंसे रहित, ५६९ नाकनदी–स्वर्गलोककी नदी, ५७० निरयार्णव-दीर्घनौः–नरक-समुद्रसे पार होनेके लिये विशाल नौकास्वरूपा।

पुण्यप्रदा पुण्यगर्भा पुण्या पुण्यतरङ्गिणी ।
पृथुः पृथुफला पूर्णा प्रणतार्तिप्रभञ्जनी ॥१०४॥

५७१ पुण्यप्रदा–पुण्य देनेवाली, ५७२ पुण्यगर्भा–अपने भीतर पुण्य धारण करनेवाली, ५७३ पुण्या–पुण्य-स्वरूपा, ५७४ पुण्यतरङ्गिणी–पवित्र लहरोंवाली,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५७५ पृथुः—विशाल एवं परिपूर्ण, ५७६ पृथुफला—महान् फलवाली, ५७७ पूर्णा—सर्वत्र व्यापक, अविच्छिन्न धारासे युक्त, ५७८ प्रणतार्तिप्रभञ्जनी—शरणागतोंकी पीड़ाका नाश करनेवाली ॥ १०४ ॥

प्राणदा प्राणिजननी प्राणेशी प्राणरूपिणी ।
पद्मालया पराशक्तिः पुरजित्परमप्रिया ॥१०५॥

५७९ प्राणदा—प्राणदान करनेवाली, ५८० प्राणिजननी—जीवोंको जन्म देनेवाली, ५८१ प्राणेशी—प्राणोंकी अधीश्वरी, ५८२ प्राणरूपिणी—प्राणस्वरूपा, ५८३ पद्मालया—कमलोंमें वास करनेवाली लक्ष्मीस्वरूपा, ५८४ पराशक्तिः—सर्वोत्कृष्ट शक्ति, ५८५ पुरजित्परमप्रिया—त्रिपुरारि शिवकी अतिशय वल्लभा ॥ १०५ ॥

परा परफलप्राप्तिः पावनी च पयस्विनी ।
परानन्दा प्रकृष्टार्था प्रतिष्ठा पालिनी परा ॥१०६॥

५८६ परा—सर्वश्रेष्ठ, ५८७ परफलप्राप्तिः—सर्वोत्तम फल-मोक्षकी प्राप्ति करानेवाली, ५८८ पावनी—सबको पवित्र करनेवाली, ५८९ पयस्विनी—उत्तम जलवाली, ५९० परानन्दा—परमानन्दस्वरूपा, ५९१ प्रकृष्टार्था—श्रेष्ठ पुरुषार्थस्वरूपा, ५९२ प्रतिष्ठा—सबकी आधारभूता, ५९३ पालिनी—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पालन करनेवाली, ५९४ परा—परमात्मस्वरूपा ॥ १०६ ॥

पुराणपठिता प्रीता प्रणवाक्षररूपिणी ।
पार्वती प्रेमसम्पन्ना पशुपाशविमोचनी ॥१०७॥

५९५ पुराणपठिता—पुराणोंमें जिनकी महिमाका प्रतिपादन किया गया है, ५९६ प्रीता—सबको प्रिय लगनेवाली, ५९७ प्रणवाक्षररूपिणी—ॐकारस्वरूपा, ५९८ पार्वती—पर्वतराजकन्या, ५९९ प्रेमसम्पन्ना—प्रेमसे परिपूर्ण, ६०० पशुपाशविमोचनी—जीवोंके अज्ञानमय बन्धनको दूर करनेवाली ॥१०७॥

परमात्मस्वरूपा च परब्रह्मप्रकाशिनी ।
परमानन्दनिष्यन्दा प्रायश्चित्तस्वरूपिणी ॥१०८॥

६०१ परमात्मस्वरूपा—परब्रह्मरूपिणी, ६०२ परब्रह्मप्रकाशिनी—परब्रह्मको प्रकाशित करनेवाली, ६०३ परमानन्दनिष्यन्दा—परमानन्दरूप प्रवाहवाली, ६०४ प्रायश्चित्तस्वरूपिणी—समस्त पापोंके लिये एकमात्र प्रायश्चित्तस्वरूपा ॥ १०८ ॥

पानीयरूपनिर्वाणा परित्राणपरायणा ।
पापेन्धनदवज्वाला पापारिः पापनामनुत् ॥१०९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६०५ पानीयरूपनिर्वाणा—जलरूपमें मोक्षकी निवासभूता, ६०६ परित्राणपरायणा—शरणागतोंकी रक्षामें तत्पर, ६०७ पापेन्धनदवज्वाला—पापरूपी ईंधनको जलानेके लिये दावाग्निकी लपट, ६०८ पापारिः—पापोंकी शत्रु, ६०९ पापनामनुत्—पापोंका नामतक मिटा देनेवाली॥

परमैश्वर्यजननी प्रज्ञा प्राज्ञा परापरा।
प्रत्यक्षलक्ष्मीः पद्माक्षी परव्योमामृतस्रवा ॥११०॥

६१० परमैश्वर्यजननी—अणिमा आदि महान् ऐश्वर्योंको जन्म देनेवाली, ६११ प्रज्ञा—उत्तम ज्ञानस्वरूपा, ६१२ प्राज्ञा—विदुषी, ६१३ परापरा—कारणकार्यस्वरूपा, ६१४ प्रत्यक्षलक्ष्मीः—साक्षात् लक्ष्मीस्वरूपा, ६१५ पद्माक्षी—कमलके समान अथवा कमलस्वरूप नेत्रोंवाली, ६१६ परव्योमामृतस्रवा—परब्रह्मस्वरूप अमृतमय जलको बहानेवाली ११०

प्रसन्नरूपा प्रणिधिः पूता प्रत्यक्षदेवता।
पिनाकिपरमप्रीता परमेष्ठिकमण्डलुः ॥१११॥

६१७ प्रसन्नरूपा—आनन्दमय स्वरूपवाली, ६१८ प्रणिधिः—सर्वाधाररूपा, ६१९ पूता—परम पवित्र, ६२० प्रत्यक्षदेवता—सबके नेत्रोंके समक्ष प्रकट रहनेवाली सच्चिदानन्दमयी देवी, ६२१ पिनाकिपरमप्रीता—पिनाक-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धारी भगवान् शिवकी परम प्रियतमा, ६२२ परमेष्ठि-कमण्डलुः—ब्रह्माजीके कमण्डलुमें वास करनेवाली ॥१११॥

पद्मनाभपदार्घ्येण प्रसूता पद्ममालिनी ।
परर्द्धिदा पुष्टिकरी पथ्या पूर्तिः प्रभावती ॥११२॥

६२३ पद्मनाभपदार्घ्येण प्रसूता—भगवान् विष्णुके चरण पखारनेसे प्रकट हुई, ६२४ पद्ममालिनी—कमल-पुष्पोंकी माला धारण करनेवाली, ६२५ परर्द्धिदा—उत्तम समृद्धि देनेवाली, ६२६ पुष्टिकरी—पोषण करनेवाली, ६२७ पथ्या—संसाररूपी रोगकी निवृत्तिके लिये हितकर आहारस्वरूपा, ६२८ पूर्तिः—पूर्णता, ६२९ प्रभावती—प्रकाशवती ॥ ११२ ॥

पुनाना पीतगर्भघ्नी पापपर्वतनाशिनी ।
फलिनी फलहस्ता च फुल्लाम्बुजविलोचना ॥११३॥

६३० पुनाना—पवित्र करनेवाली, ६३१ पीतगर्भघ्नी—पीतगर्भ अर्थात् राक्षसोंका नाश करनेवाली, ६३२ पाप-पर्वतनाशिनी—पापरूपी पर्वतका नाश करनेवाली, ६३३ फलिनी—देने योग्य फलसे युक्त, ६३४ फलहस्ता—भक्तोंको देनेके लिये सब प्रकारके फल हाथमें धारण करने-वाली, ६३५ फुल्लाम्बुजविलोचना—विकसित कमलके समान नेत्रोंवाली ॥ ११३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फालितैनोमहाक्षेत्रा फणिलोकविभूषणम् ।
फेनच्छलप्रणुन्नैनाः फुल्लकैरवगन्धिनी ॥११४॥

६३६ फालितैनोमहाक्षेत्रा—पापोंके महाक्षेत्रको विदीर्ण करनेवाली, ६३७ फणिलोकविभूषणम्—भोगवती गङ्गाके रूपमें नागलोकको विभूषित करनेवाली, ६३८ फेनच्छलप्रणुन्नैनाः—फेन छाँटनेके व्याजसे पापराशिको दूर हटानेवाली, ६३९ फुल्लकैरवगन्धिनी—खिले हुए कुमुदपुष्पोंकी गन्धसे युक्त ॥ ११४ ॥

फेनिलाच्छाम्बुधाराभा फुडुच्चाटितपातका ।
फाणितस्वादुसलिला फाण्टपथ्यजलाविला ॥११५॥

६४० फेनिलाच्छाम्बुधाराभा—फेनयुक्त स्वच्छ जलकी धारासे उद्भासित होनेवाली, ६४१ फुडुच्चाटितपातका—'फुट्' इस शब्दके साथ पातकोंको उखाड़ फेंकनेवाली, ६४२ फाणितस्वादुसलिला—सीराके समान स्वादिष्ट जलवाली, ६४३ फाण्टपथ्यजलाविला—मद्यके समान पथ्य (हितकर) जलसे भरी हुई ॥ ११५ ॥

विश्वमाता च विश्वेशी विश्वा विश्वेश्वरप्रिया ।
ब्रह्मण्या ब्रह्मकृद् ब्राह्मी ब्रह्मिष्ठा विमलोदका ॥११६॥

६४४ विश्वमाता—समस्त संसारकी माता,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६४५ विश्वेशी—जगदीश्वरी, ६४६ विश्वा—सर्वस्वरूपा, ६४७ विश्वेश्वरप्रिया—विश्वनाथवल्लभा, ६४८ ब्रह्मण्या—ब्राह्मणहितकारिणी, ६४९ ब्रह्मकृत्—ब्रह्मा आदि देवताओंको उत्पन्न करनेवाली जगदीश्वरी, ६५० ब्राह्मी—ब्रह्मशक्ति, ६५१ ब्रह्मिष्ठा—ब्रह्मनिष्ठ, ६५२ विमलोदका—निर्मल जलवाली ॥ ११६ ॥

विभावरी च विरजा विक्रान्तानेकविष्टपा।
विश्वमित्रं विष्णुपदी वैष्णवी वैष्णवप्रिया ॥११७॥

६५३ विभावरी—रात्रिस्वरूपा, ६५४ विरजा—रजोगुणरहिता, ६५५ विक्रान्तानेकविष्टपा—अनेक भुवनोंमें व्याप्त, ६५६ विश्वमित्रम्—सम्पूर्ण जगत्की सुहृद्, ६५७ विष्णुपदी—भगवान् विष्णुके चरणोंसे प्रकट हुई, ६५८ वैष्णवी—विष्णुशक्ति, ६५९ वैष्णवप्रिया—विष्णुभक्तोंको प्रिय ॥ ११७ ॥

विरूपाक्षप्रियकरी विभूतिर्विश्वतोमुखी।
विपाशा वैबुधी वेद्या वेदाक्षररसस्रवा ॥११८॥

६६० विरूपाक्षप्रियकरी—भगवान् शंकरका प्रिय कार्य करनेवाली, ६६१ विभूतिः—अणिमा आदि अष्टविध ऐश्वर्यरूपा, ६६२ विश्वतोमुखी—सब ओर मुखवाली,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६६३ विपाशा—बन्धनरहित, अथवा विपाशा (व्यास) नामक नदी, ६६४ वैबुधी—देवाधिदेव विष्णुकी शक्ति अथवा देवलोकमें प्रकट, ६६५ वेद्या—जानने योग्य, ६६६ वेदाक्षररसस्रवा—वेदके अक्षरोंसे प्रतिपादित ब्रह्मानन्दरसका स्रोत बहानेवाली, ब्रह्मद्रवरूपा ॥ ११८ ॥

विद्या वेगवती वन्द्या बृंहणी ब्रह्मवादिनी ।
वरदा विप्रकृष्टा च वरिष्ठा च विशोधनी ॥११९॥

६६७ विद्या—ब्रह्मविद्यास्वरूपा, ६६८ वेगवती—बड़े वेगसे बहनेवाली, ६६९ वन्द्या—वन्दनीया, ६७० बृंहणी—बृहत्स्वरूपा अथवा विस्तार करनेवाली, ६७१ ब्रह्मवादिनी—ब्रह्मका उपदेश करनेवाली, ६७२ वरदा—वर देनेवाली, ६७३ विप्रकृष्टा—सर्वोत्तम, ६७४ वरिष्ठा—श्रेष्ठा, ६७५ विशोधनी—विशेषरूपसे शुद्ध (पवित्र) करनेवाली ॥

विद्याधरी विशोका च वयोवृन्दनिषेविता ।
बहूदका बलवती व्योमस्था विबुधप्रिया ॥१२०॥

६७६ विद्याधरी—सम्पूर्ण विद्याओंको धारण करनेवाली, ६७७ विशोका—शोकरहित, ६७८ वयोवृन्दनिषेविता—पक्षियोंके समुदायद्वारा निषेवित, ६७९ बहूदका—बहुत जलवाली, ६८० बलवती—बलसे युक्त, ६८१ व्योमस्था—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वर्गङ्गारूपसे आकाशमें स्थित, ६८२ विबुधप्रिया-देवताओंकी प्रिय नदी ॥ १२० ॥

वाणी वेदवती वित्ता ब्रह्मविद्यातरङ्गिणी ।
ब्रह्माण्डकोटिव्याप्ताम्बुर्ब्रह्महत्यापहारिणी ॥१२१॥

६८३ वाणी—सरस्वतीस्वरूपा, ६८४ वेदवती—वैदिक ज्ञानसे सम्पन्न अथवा वेदवती नामकी साध्वी-स्वरूपा, ६८५ वित्ता—ज्ञानस्वरूपा, ६८६ ब्रह्मविद्या-तरङ्गिणी—ब्रह्मविद्यारूपी तरङ्गोंसे युक्त, ६८७ ब्रह्माण्डकोटि-व्याप्ताम्बुः—करोड़ों ब्रह्माण्डोंमें व्याप्त जलवाली, ६८८ ब्रह्महत्यापहारिणी—ब्रह्महत्याका अपहरण करनेवाली १२१

ब्रह्मेशविष्णुरूपा च बुद्धिर्विभववर्द्धिनी ।
विलासिसुखदा वश्या व्यापिनी च वृषारणिः ।१२२।

६८९ ब्रह्मेशविष्णुरूपा—ब्रह्मा, शिव और विष्णु-स्वरूपा, ६९० बुद्धिः—बुद्धिस्वरूपा, ६९१ विभववर्द्धिनी—धन बढ़ानेवाली, ६९२ विलासिसुखदा—विलासियोंको सुख देनेवाली, ६९३ वश्या—भगवदिच्छाके अधीन रहने-वाली, ६९४ व्यापिनी—सर्वत्र व्यापक, ६९५ वृषारणिः—धर्मोत्पत्तिकी कारणरूपा ॥ १२२ ॥

वृषाङ्कमौलिनिलया विपन्नार्तिप्रभञ्जनी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विनीता विनता ब्रध्नतनया विनयान्विता ॥१२३॥

६९६ वृषाङ्कमौलिनिलया—भगवान् शंकरके मस्तकपर निवास करनेवाली, ६९७ विपन्नार्तिप्रभञ्जनी—विपत्तिमें पड़े हुए भक्तजनोंकी पीड़ा अथवा अपने जलमें मृत्युको प्राप्त हुए पुरुषोंकी दुर्गति एवं कष्टका निवारण करनेवाली, ६९८ विनीता—विनयशीला, ६९९ विनता—विशेषतः नम्र, ७०० ब्रध्नतनया—सूर्यपुत्री यमुनास्वरूपा, ७०१ विनयान्विता—विनययुक्त ॥ १२३ ॥

विपञ्ची वाद्यकुशला वेणुश्रुतिविचक्षणा ।
वर्चस्करी बलकरी बलोन्मूलितकल्मषा ॥१२४॥

७०२ विपञ्ची—वीणास्वरूपा अथवा वीणाकी-सी मधुर ध्वनि करनेवाली, ७०३ वाद्यकुशला—सभी प्रकारके वाद्योंको बजानेमें चतुर, ७०४ वेणुश्रुतिविचक्षणा—वेणुगीत सुनने और समझनेमें कुशल, ७०५ वर्चस्करी—तेज उत्पन्न करनेवाली, ७०६ बलकरी—सामर्थ्य प्रदान करनेवाली, ७०७ बलोन्मूलितकल्मषा—बलपूर्वक पापोंका उच्छेद करनेवाली ॥ १२४ ॥

विपाप्मा विगतातङ्का विकल्पपरिवर्जिता ।
वृष्टिकर्त्री वृष्टिजला विधिर्विच्छिन्नबन्धना ॥१२५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७०८ विपाप्मा—पापरहित, ७०९ विगतातङ्का—भयरहित, ७१० विकल्पपरिवर्जिता—भेददृष्टिसे रहित, ७११ वृष्टिकर्त्री—सूर्यरूपसे वर्षा करनेवाली, ७१२ वृष्टिजला—वर्षाके कारणभूत जलवाली, ७१३ विधिः—ब्रह्मारूपसे सृष्टि करनेवाली, ७१४ विच्छिन्नबन्धना—अपने आश्रितोंके संसारबन्धनका नाश करनेवाली ॥ १२५ ॥

व्रतरूपा वित्तरूपा बहुविघ्नविनाशकृत् ।
वसुधारा वसुमती विचित्राङ्गी विभावसुः ॥१२६॥

७१५ व्रतरूपा—कृच्छ्र-चान्द्रायणादि व्रतस्वरूपा अथवा भक्तोंके व्रत (संकल्प) के अनुसार स्वरूप धारण करनेवाली, ७१६ वित्तरूपा—वैभवरूपिणी, ७१७ बहुविघ्नविनाशकृत्—बहुत-से विघ्नोंका विनाश करनेवाली, ७१८ वसुधारा—वसु (धन) धारण करनेवाली, आठ वसुओंको मातारूपसे गर्भमें धारण करनेवाली अथवा 'वसुधारा'-नदीस्वरूपा, ७१९ वसुमती—रत्नगर्भा वसुधारूपा, ७२० विचित्राङ्गी—अद्भुत शरीरवाली, ७२१ विभावसुः—अग्नि अथवा सूर्यकी भाँति प्रकाशित होनेवाली ॥१२६॥

विजया विश्वबीजं च वामदेवी वरप्रदा ।
वृषाश्रिता विषघ्नी च विज्ञानोर्म्यंशुमालिनी ।१२७।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७२२ विजया—विजयशालिनी, ७२३ विश्वबीजम्—जगत्की कारणस्वरूपा, ७२४ वामदेवी—वामदेव शिवकी शक्ति, मनोहारिणी देवी, ७२५ वरप्रदा—वर देनेवाली, ७२६ वृषाश्रिता—धर्मके आश्रित, ७२७ विषघ्नी—विषका प्रभाव नष्ट करनेवाली, ७२८ विज्ञानोर्म्यंशुमालिनी—विज्ञानमयी तरङ्गों और किरणोंसे युक्त ॥ १२७ ॥

भव्या भोगवती भद्रा भवानी भूतभाविनी ।
भूतधात्री भयहरा भक्तदारिद्र्यघातिनी ॥१२८॥

७२९ भव्या—कल्याणमयी, ७३० भोगवती—भोगवती नामसे प्रसिद्ध पातालगङ्गा, ७३१ भद्रा—मङ्गलमयी, ७३२ भवानी—शिवपत्नी, ७३३ भूतभाविनी—समस्त प्राणियोंकी उत्पत्ति और पालन करनेवाली, ७३४ भूतधात्री—चारों प्रकारके जीवोंका धारण-पोषण करनेवाली, ७३५ भयहरा—संसार-भयका निवारण करनेवाली, ७३६ भक्तदारिद्र्यघातिनी—भक्तोंकी दरिद्रताका नाश करनेवाली ॥ १२८ ॥

भुक्तिमुक्तिप्रदा भेशी भक्तस्वर्गापवर्गदा ।
भागीरथी भानुमती भाग्यं भोगवती भृतिः ॥१२९॥

७३७ भुक्तिमुक्तिप्रदा—भोग और मोक्ष देनेवाली, ७३८ भेशी—नक्षत्रोंकी अधीश्वरी, ७३९ भक्तस्वर्गापवर्गदा—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भक्तोंको स्वर्ग और मोक्ष देनेवाली, ७४० भागीरथी—राजा भगीरथके द्वारा लायी हुई, ७४१ भानुमती—प्रकाशवती, ७४२ भाग्यम्—नियतिरूपा, ७४३ भोगवती—विविध प्रकारके भोगोंसे सम्पन्न, ७४४ भूतिः—भरण-पोषणका साधन ॥ १२९ ॥

भवप्रिया भवद्वेष्ट्री भूतिदा भूतिभूषणा ।
भाललोचनभावज्ञा भूतभव्यभवत्प्रभुः ॥१३०॥

७४५ भवप्रिया—भगवान् शंकरकी प्रिया, ७४६ भवद्वेष्ट्री—संसार-बन्धनका नाश करनेवाली, ७४७ भूतिदा—ऐश्वर्यको देनेवाली, ७४८ भूतिभूषणा—विभूतिसे विभूषित, ७४९ भाललोचनभावज्ञा—भगवान् शिवके भावको जाननेवाली, ७५० भूतभव्यभवत्प्रभुः—भूत, वर्तमान और भविष्य—तीनों कालमें होनेवाले जीवोंकी स्वामिनी ॥ १३० ॥

भ्रान्तिज्ञानप्रशमनी भिन्नब्रह्माण्डमण्डपा ।
भूरिदा भक्तसुलभा भाग्यवद्दृष्टिगोचरी ॥१३१॥

७५१ भ्रान्तिज्ञानप्रशमनी—भ्रमात्मक ज्ञानका निवारण करनेवाली, ७५२ भिन्नब्रह्माण्डमण्डपा—ब्रह्माण्डरूपी मण्डपका भेदन करनेवाली, ७५३ भूरिदा—बहुत देनेवाली, ७५४ भक्तसुलभा—भक्तोंको सुगमतापूर्वक प्राप्त होनेवाली,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७५५ भाग्यवद्दृष्टिगोचरी—भाग्यवानोंको प्रत्यक्ष दर्शन देनेवाली ॥ १३१ ॥

भञ्जितोपप्लवकुला भक्ष्यभोज्यसुखप्रदा ।
भिक्षणीया भिक्षुमाता भावा भावस्वरूपिणी ॥१३२॥

७५६ भञ्जितोपप्लवकुला—भक्तजनोंके उपद्रवोंका नाश करनेवाली, ७५७ भक्ष्यभोज्यसुखप्रदा—भक्ष्य-भोज्य-का सुख देनेवाली, ७५८ भिक्षणीया—अभ्युदय और निःश्रेयसकी इच्छावाले पुरुषोंद्वारा याचना करने योग्य, ७५९ भिक्षुमाता—भिक्षुओं—परमहंस जनोंको माताके समान सुख देनेवाली, ७६० भावा—सबको उत्पन्न करनेवाली, ७६१ भावस्वरूपिणी—पदार्थरूपा ॥ १३२ ॥

मन्दाकिनी महानन्दा माता मुक्तितरङ्गिणी ।
महोदया मधुमती महापुण्या मुदाकरी ॥१३३॥

७६२ मन्दाकिनी—स्वर्गङ्गा, ७६३ महानन्दा—परमानन्दस्वरूपा, ७६४—माता—सम्पूर्ण विश्वके पापरूपी मलको पुत्रवत्सला माताकी भाँति दूर करनेवाली, ७६५ मुक्तितरङ्गिणी—मोक्षरूप तरङ्गोंसे सुशोभित, ७६६ महोदया—महान् अभ्युदयरूपा, ७६७ मधुमती—अमृतमय जलसे युक्त, ७६८ महापुण्या—महापुण्यस्वरूपा, ७६९ मुदाकरी—हर्षोल्लासकी निधि ॥ १३३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुनिस्तुता मोहहन्त्री महातीर्था मधुस्रवा ।
माधवी मानिनी मान्या मनोरथपथातिगा ॥१३४॥

७७० मुनिस्तुता—मुनियोंके द्वारा प्रशंसित एवं पूजित, ७७१ मोहहन्त्री—अज्ञानका नाश करनेवाली, ७७२ महातीर्था—महान् तीर्थस्वरूपा, ७७३ मधुस्रवा—मीठे जलका स्रोत बहानेवाली, ७७४ माधवी—विष्णुप्रिया, ७७५ मानिनी—सबके द्वारा सम्मान प्राप्त करनेवाली, ७७६ मान्या—माननीया, पूजनीया, ७७७ मनोरथपथातिगा—मनकी पहुँचसे परे विराजमान ॥ १३४ ॥

मोक्षदा मतिदा मुख्या महाभाग्यजनाश्रिता ।
महावेगवती मेध्या महा महिमभूषणा ॥१३५॥

७७८ मोक्षदा—मोक्ष देनेवाली, ७७९ मतिदा—उत्तम बुद्धि देनेवाली, ७८० मुख्या—श्रेष्ठा, ७८१ महाभाग्यजनाश्रिता—बड़भागी मनुष्योंद्वारा सेवित, ७८२ महावेगवती—बड़े वेगसे बहनेवाली, ७८३ मेध्या—पवित्रा, ७८४ महा—उत्सवरूपा, ७८५ महिमभूषणा—अपनी महिमासे विभूषित ॥ १३५ ॥

महाप्रभावा महती मीनचञ्चललोचना ।
महाकारुण्यसम्पूर्णा महर्द्धिश्च महोत्पला ॥१३६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७८६ महाप्रभावा—महान् प्रभावसे युक्त, ७८७ महती—विशाल, ७८८ मीनचञ्चललोचना—मीनके समान अथवा मीनस्वरूप चञ्चल नेत्रोंवाली, ७८९ महाकारुण्यसम्पूर्णा—अत्यन्त कृपासे भरी हुई, ७९० महर्द्धिः—बड़ी भारी समृद्धि देनेवाली अथवा महती समृद्धिरूपा, ७९१ महोत्पला—बड़े-बड़े कमलोंको उत्पन्न करनेवाली १३६

मूर्तिमन्मुक्तिरमणी मणिमाणिक्यभूषणा ।
मुक्ताकलापनेपथ्या मनोनयननन्दिनी ॥१३७॥

७९२ मूर्तिमत्—मूर्तिमान् तेज, ७९३ मुक्तिरमणी—मुक्तिरूपा सुन्दरी स्त्री, ७९४ मणिमाणिक्यभूषणा—मणि-माणिक्यमय आभूषणोंवाली, ७९५ मुक्ताकलापनेपथ्या—मोतियोंकी मालासे शृङ्गार करनेवाली, ७९६ मनोनयननन्दिनी—मन और नेत्रोंको आनन्द देनेवाली ॥१३७॥

महापातकराशिघ्नी महादेवार्धहारिणी ।
महोर्मिमालिनी मुक्ता महादेवी मनोन्मनी ॥१३८॥

७९७ महापातकराशिघ्नी—महापातकोंकी राशिका नाश करनेवाली, ७९८ महादेवार्धहारिणी—महादेवजीके आधे शरीरपर अधिकार करनेवाली गौरीस्वरूपा, ७९९ महोर्मिमालिनी—महती तरङ्गमालाओंसे युक्त, ८०० मुक्ता—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुक्तस्वरूपा, ८०१ महादेवी—महिमामयीदेवी, ८०२मनोन्मनी—मनको उन्मन (उत्तम ज्ञानसे युक्त) करनेवाली॥ १३८॥

महापुण्योदयप्राप्या मायातिमिरचन्द्रिका ।
महाविद्या महामाया महामेधा महौषधम् ॥१३९॥

८०३ महापुण्योदयप्राप्या—महान् पुण्यका उदय होनेपर प्राप्त होनेवाली, ८०४ मायातिमिरचन्द्रिका—मायामय अन्धकारका नाश करनेके लिये चन्द्रप्रभारूपा, ८०५ महाविद्या—ब्रह्मविद्यास्वरूपा, ८०६ महामाया—महामाया स्वरूपिणी, ८०७ महामेधा—महान् बुद्धिमती, ८०८ महौषधम्—भवव्याधिके लिये उत्तम ओषधरूपा १३९

मालाधरी महोपाया महोरगविभूषणा ।
महामोहप्रशमनी महामङ्गलमङ्गलम् ॥१४०॥

८०९ मालाधरी—माला धारण करनेवाली, ८१० महोपाया—मुक्ति प्राप्तिके लिये महासाधनरूपा, ८११ महोरगविभूषणा—महान् सर्पको आभूषणरूपमें धारण करनेवाली, ८१२ महामोहप्रशमनी—महान् मोहको शान्त करनेवाली, ८१३ महामङ्गलमङ्गलम्—महान् मङ्गलोंके लिये भी मङ्गलरूप ॥ १४० ॥

मार्तण्डमण्डलचरी महालक्ष्मीर्मदोज्झिता ।
यशस्विनी यशोदा च योग्या युक्तात्मसेविता॥१४१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८१४ मार्तण्डमण्डलचरी–आकाशगङ्गारूपसे सूर्य-लोकमें विचरनेवाली, ८१५ महालक्ष्मीः–महालक्ष्मी-स्वरूपा, ८१६ मदोज्झिता—मदसे रहित, ८१७ यशस्विनी–उत्तम यशसे युक्त, ८१८ यशोदा–सुयश देनेवाली, ८१९ योग्या–सब प्रकारसे सुयोग्य, ८२० युक्तात्म-सेविता–जितात्मा पुरुषोंद्वारा सेवित ॥ १४१ ॥

योगसिद्धिप्रदा याच्या यज्ञेशपरिपूरिता ।
यज्ञेशी यज्ञफलदा यजनीया यशस्करी ॥१४२॥

८२१ योगसिद्धिप्रदा–योगकी सिद्धियाँ देनेवाली, ८२२ याच्या–प्रार्थनीया, ८२३ यज्ञेशपरिपूरिता–यज्ञेश्वर विष्णुसे व्याप्त, ८२४ यज्ञेशी–यज्ञकी अधिष्ठात्री देवी, ८२५ यज्ञफलदा–स्मरण करनेपर यज्ञोंका फल देनेवाली, ८२६ यजनीया–पूजनीया, ८२७ यशस्करी–यश देनेवाली॥

यमिसेव्या योगयोनिर्योगिनी युक्तबुद्धिदा ।
योगज्ञानप्रदा युक्ता यमाद्यष्टाङ्गयोगयुक् ॥१४३॥

८२८ यमिसेव्या–संयमी पुरुषोंद्वारा सेवन करनेयोग्य, ८२९ योगयोनिः–योगकी उत्पत्तिका स्थान, ८३० योगिनी–योगको जाननेवाली, ८३१ युक्तबुद्धिदा–योगयुक्त बुद्धि देनेवाली, ८३२ योगज्ञानप्रदा–योग और ज्ञान देनेवाली,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८३३ युक्ता—मन और इन्द्रियोंको संयममें रखनेवाली, ८३४ यमाद्यष्टाङ्गयोगयुक्—यम, नियम आदि आठ अङ्गों-वाले योगसे युक्त ॥ १४३ ॥

यन्त्रिताघौघसंचारा यमलोकनिवारिणी ।
यातायातप्रशमनी यातनानामकृन्तनी ॥१४४॥

८३५ यन्त्रिताघौघसंचारा—पापराशियोंके संचारको नियन्त्रित करनेवाली, ८३६ यमलोकनिवारिणी—यमलोकका निवारण करनेवाली, ८३७ यातायातप्रशमनी—आवागमन अथवा जन्म-मृत्युका कष्ट दूर करनेवाली, ८३८ यातना-नामकृन्तनी—यातनाका नाम-निशान मिटा देनेवाली ॥ १४४॥

यामिनीशहिमाच्छोदा युगधर्मविवर्जिता ।
रेवती रतिकृद् रम्या रत्नगर्भा रमा रतिः ॥१४५॥

८३९ यामिनीशहिमाच्छोदा—चन्द्रमा और बर्फके समान स्वच्छ एवं शीतल जलवाली, ८४० युगधर्म-विवर्जिता—कलियुगके धर्म—हिंसा और असत्य आदिसे सर्वथा रहित, ८४१ रेवती—रेवती नामक नक्षत्रस्वरूपा, ८४२ रति-कृत्—भगवान्‌के प्रति अनुराग रखनेवाली, ८४३ रम्या—रमणीया, ८४४ रत्नगर्भा—अपने भीतर रत्न धारण करनेवाली, ८४५ रमा—लक्ष्मीरूपा, ८४६ रतिः—अनुरागरूपा ॥ १४५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रत्नाकरप्रेमपात्रं रसज्ञा रसरूपिणी ।
रत्नप्रासादगर्भा च रमणीयतरङ्गिणी ॥१४६॥

८४७ रत्नाकरप्रेमपात्रम्—रत्नाकर—समुद्रकी प्रीतिपात्र, ८४८ रसज्ञा—रसको जाननेवाली, ८४९ रसरूपिणी—रस-स्वरूपा, ८५० रत्नप्रासादगर्भा—जिसके भीतर रत्नमय देवालय शोभा पा रहे हों, ८५१ रमणीयतरङ्गिणी—रमणीय लहरोंसे युक्त ॥ १४६ ॥

रत्नार्चीं रुद्ररमणी रागद्वेषविनाशिनी ।
रमा रामा रम्यरूपा रोगिजीवातुरूपिणी ॥१४७॥

८५२ रत्नार्चिः—रत्नोंके समान कान्तिमती, ८५३ रुद्र रमणी—भगवान् रुद्रकी जटामें रमण करनेवाली, ८५४ राग-द्वेषविनाशिनी—राग और द्वेषका नाश करनेवाली, ८५५ रमा—नेत्र और मनको रमानेवाली, ८५६ रामा—मनोहर स्त्री अथवा योगियोंके मनको रमानेवाली, ८५७ रम्य-रूपा—रमणीय रूपवाली, ८५८ रोगिजीवातुरूपिणी—संसार-रोगसे ग्रस्त पुरुषोंके लिये संजीवन ओषधिरूपा १४७

रुचिकृद् रोचनी रम्या रुचिरा रोगहारिणी ।
राजहंसा रत्नवती राजत्कल्लोलराजिका ॥१४८॥

८५९ रुचिकृत्—प्रकाश करनेवाली, ८६० रोचनी—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपने दर्शनकी रुचि उत्पन्न करनेवाली, ८६१ रम्या—रमाकी हितकारिणी, ८६२ रुचिरा—मनोहर रूपवाली, ८६३ रोगहारिणी—संसाररूपी रोगका नाश करनेवाली, ८६४ राजहंसा—शोभायमान हंसोंसे युक्त, ८६५ रत्नवती—अनेक प्रकारके रत्नोंसे संयुक्त, ८६६ राजत्कल्लोलराजिका—शोभाशाली तरङ्गमालाओंसे युक्त ॥ १४८ ॥

रामणीयकरेखा च रुजारी रोगरोषिणी ।
राका रङ्कार्तिशमनी रम्या रोलम्बराविणी ॥१४९॥

८६७ रामणीयकरेखा—जिसकी जलधारा रमणीयताकी सीमारूप है, ८६८ रुजारिः—रोगोंकी शत्रुभूता, ८६९ रोगरोषिणी—रोगोंपर रोष प्रकट करनेवाली, ८७० राका—पौर्णमासीस्वरूपा, ८७१ रङ्कार्तिशमनी—दीन-दुखियोंकी दैन्यवेदनाको शान्त करनेवाली, ८७२ रम्या—रमणीया, ८७३ रोलम्बराविणी—भ्रमरोंकी गुंजारके समान जलकी कलकल ध्वनि करनेवाली ॥ १४९ ॥

रागिणी रञ्जितशिवा रूपलावण्यशेवधिः ।
लोकप्रसूर्लोकवन्द्या लोलत्कल्लोलमालिनी॥१५०॥

८७४ रागिणी—भगवान्‌के प्रति अनुराग रखनेवाली, ८७५ रञ्जितशिवा—अपनी संनिधिसे भगवान् शिवको प्रसन्न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करनेवाली, ८७६ रूपलावण्यशेवधिः—सौन्दर्य और कान्तिकी निधि, ८७७ लोकप्रसूः—लोकमाता, ८७८ लोकवन्द्या—सम्पूर्ण विश्वके लिये वन्दनीया, ८७९ लोलत्कल्लोलमालिनी—चञ्चल लहरोंकी श्रेणियोंसे सुशोभित ॥ १५० ॥

लीलावती लोकभूमिर्लोकलोचनचन्द्रिका ।
लेखस्रवन्ती लटभा लघुवेगा लघुत्वहृत् ॥१५१॥

८८० लीलावती—सृष्टिकी उत्पत्ति, पालन और संहारकी लीला करनेवाली, ८८१ लोकभूमिः—सम्पूर्ण भुवनोंकी आधारभूता, ८८२ लोकलोचनचन्द्रिका—लोगोंके नेत्रोंमें चाँदनीकी भाँति आह्लाद उत्पन्न करनेवाली, ८८३ लेखस्रवन्ती—देवनदी, ८८४ लटभा—भगवत्प्रेमके लिये लोलुप-सी प्रतीत होनेवाली, ८८५ लघुवेगा—शीतकालमें लघुवेगवाली, ८८६ लघुत्वहृत्—भक्तोंकी लघुता दूर करनेवाली ॥ १५१ ॥

लास्यत्तरङ्गहस्ता च ललिता लयभङ्गिगा ।
लोकबन्धुर्लोकधात्री लोकोत्तरगुणोर्जिता ॥१५२॥

८८७ लास्यत्तरङ्गहस्ता—नृत्य-सा करती हुई चञ्चल लहरें ही जिनके मानो हाथ हैं, ८८८ ललिता—मनोहर रूपवाली, ८८९ लयभङ्गिगा—लय—नृत्यकी गति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और वाद्यकी समताकी भङ्गी (अंदाज) से चलनेवाली, ८९० लोकबन्धुः—सम्पूर्ण जगत्का बन्धुकी भाँति हित चाहनेवाली, ८९१ लोकधात्री—माताकी भाँति विश्वका पालन-पोषण करनेवाली, ८९२ लोकोत्तरगुणोर्जिता—अलौकिक गुणोंमें बढ़ी-चढ़ी ॥ १५२ ॥

लोकत्रयहिता लोका लक्ष्मीर्लक्षणलक्षिता ।
लीला लक्षितनिर्वाणा लावण्यामृतवर्षिणी ॥१५३॥

८९३ लोकत्रयहिता—तीनों लोकोंका हित करनेवाली, ८९४ लोका—लोकस्वरूपा, ८९५ लक्ष्मीः—लक्ष्मीस्वरूपा, ८९६ लक्षणलक्षिता—शुभ लक्षणोंसे उपलक्षिता, ८९७ लीला—भगवत्क्रीडास्वरूपा, ८९८ लक्षितनिर्वाणा—मोक्षका साक्षात्कार करानेवाली, ८९९ लावण्यामृतवर्षिणी—लावण्यमय अमृतकी वर्षा करनेवाली ॥ १५३ ॥

वैश्वानरी वासवेड्या वन्ध्यत्वपरिहारिणी ।
वासुदेवाङ्घ्रिरेणुघ्नी वज्रिवज्रनिवारिणी ॥१५४॥

९०० वैश्वानरी—वैश्वानर(अग्नि)-स्वरूपा, ९०१ वासवेड्या—इन्द्रके द्वारा स्तवन करनेयोग्य, ९०२ वन्ध्यत्वपरिहारिणी—वन्ध्यापनका निवारण करनेवाली, ९०३ वासुदेवाङ्घ्रिरेणुघ्नी—भगवान् विष्णुके चरणोंकी धूलिको धो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डालनेवाली, ९०४ वज्रिवज्रनिवारिणी—इन्द्रके वज्रका निवारण करनेवाली ॥ १५४ ॥

शुभावती शुभफला शान्तिः शंतनुवल्लभा।
शूलिनी शैशववया शीतलामृतवाहिनी ॥१५५॥

९०५ शुभावती—मङ्गलमयी, ९०६ शुभफला—शुभ फल देनेवाली, ९०७ शान्तिः—शान्तिस्वरूपा, ९०८ शंतनु-वल्लभा—राजा शंतनुकी प्रिय पत्नी, ९०९ शूलिनी—त्रिशूल धारण करनेवाली, ९१० शैशववया—बाल्या-वस्थासे युक्त, ९११ शीतलामृतवाहिनी—शीतल जलकी धारा बहानेवाली ॥ १५५ ॥

शोभावती शीलवती शोषिताशेषकिल्बिषा।
शरण्या शिवदा शिष्टा शरजन्मप्रसूः शिवा ॥१५६॥

९१२ शोभावती—शोभायुक्त, ९१३ शीलवती—सुशीला, ९१४ शोषिताशेषकिल्बिषा—सम्पूर्ण पापोंका शोषण (नाश) करनेवाली, ९१५ शरण्या—शरण लेने योग्य, ९१६ शिवदा—कल्याणदायिनी, ९१७ शिष्टा—श्रेष्ठा, ९१८ शरजन्मप्रसूः—कार्तिकेयकी जननी, ९१९ शिवा—कल्याणस्वरूपा ॥ १५६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शक्तिः शशाङ्कविमला शमनस्वसृसम्मता ।
शमा शमनमार्गघ्नी शितिकण्ठमहाप्रिया ॥१५७॥

९२० शक्तिः—आह्लादिनी शक्तिस्वरूपा, ९२१ शशाङ्कविमला—चन्द्रमाके समान उज्ज्वल वर्णवाली, ९२२ शमनस्वसृसम्मता—यमराजकी बहिन यमुनाकी प्रिय सखी, ९२३ शमा—अज्ञानका नाश करनेवाली अथवा शमस्वरूपा, ९२४ शमनमार्गघ्नी—यमलोकके मार्गका निवारण करनेवाली, ९२५ शितिकण्ठमहाप्रिया—नीलकण्ठ महादेवजीकी अत्यन्त वल्लभा ॥ १५७ ॥

शुचिः शुचिकरी शेषा शेषशायिपदोद्भवा ।
श्रीनिवासश्रुतिः श्रद्धा श्रीमती श्रीः शुभव्रता॥१५८॥

९२६ शुचिः—पवित्रा, ९२७ शुचिकरी—पवित्र करनेवाली, ९२८ शेषा—प्रलयके समय भी शेष रहनेवाली—सच्चिदानन्द-ब्रह्मरूपा, ९२९ शेषशायिपदोद्भवा—शेषनागकी शय्यापर शयन करनेवाले भगवान् विष्णुके चरणारविन्दोंसे प्रकट हुई, ९३० श्रीनिवासश्रुतिः—भगवान् विष्णुसे जिनका प्रादुर्भाव सुना जाता हो, ९३१ श्रद्धा—आस्तिक्य-बुद्धिरूपा, ९३२ श्रीमती—शोभायुक्ता, ९३३ श्रीः—लक्ष्मीस्वरूपा, ९३४ शुभव्रता—शुभ व्रतवाली ॥ १५८ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धविद्या शुभावर्ता श्रुतानन्दा श्रुतिस्तुतिः ।
शिवेतरघ्नी शबरी शाम्बरीरूपधारिणी ॥ १५९॥

९३५ शुद्धविद्या—ब्रह्मविद्यास्वरूपा, ९३६ शुभावर्ता—उत्तम भँवरोंसे सुशोभित, ९३७ श्रुतानन्दा—श्रवणमात्रसे आनन्द देनेवाली, ९३८ श्रुतिस्तुतिः—श्रुतियों (वैदिक मन्त्रों) द्वारा जिनकी स्तुति की जाती है, वह, ९३९ शिवेतरघ्नी—अमङ्गलकारी पापोंका नाश करनेवाली, ९४० शबरी—किरातरूपधारी भगवान् महेश्वरकी प्रिया, ९४१ शाम्बरीरूपधारिणी—मायामय रूप धारण करनेवाली ॥ १५९ ॥

श्मशानशोधनी शान्ता शश्वच्छतधृतिस्तुता ।
शालिनी शालिशोभाढ्या शिखिवाहनगर्भभृत् ॥ १६० ॥

९४२ श्मशानशोधनी—काशीकी महाश्मशानभूमिको शुद्ध करनेवाली, ९४३ शान्ता—शान्तस्वरूपा, ९४४ शश्वत्—सनातनी, ९४५ शतधृतिस्तुता—ब्रह्माजीके द्वारा प्रशंसित, ९४६ शालिनी—शोभायमान, ९४७ शालिशोभाढ्या—धानके हरे-भरे पौधोंकी शोभासे सम्पन्न, ९४८ शिखिवाहनगर्भभृत्—मयूरवाहन कार्तिकेयको गर्भमें धारण करनेवाली ॥ १६० ॥

शंसनीयचरित्रा च शातिताशेषपातका ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षड्गुणैश्वर्यसम्पन्ना षडङ्गश्रुतिरूपिणी ॥१६१॥

९४९ शंसनीयचरित्रा—स्तवन करनेयोग्य दिव्य चरित्रोंवाली, ९५० शातिताशेषपातका—समस्त पातकोंका नाश करनेवाली, ९५१ षड्गुणैश्वर्यसम्पन्ना—पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान तथा वैराग्य—इन छः प्रकारके भगवल्लक्षणोंसे सम्पन्न, ९५२ षडङ्गश्रुतिरूपिणी—शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्यौतिष तथा कल्प—ये वेदके छः अङ्ग तथा स्वयं वेद जिनके स्वरूप हैं ॥ १६१ ॥

षण्ढताहारिसलिला स्त्यायन्नदनदीशता ।
सरिद्वरा च सुरसा सुप्रभा सुरदीर्घिका ॥१६२॥

९५३ षण्ढताहारिसलिला—नपुंसकता एवं निर्वीर्यता आदि दोष दूर करनेमें समर्थ जलवाली, ९५४ स्त्यायन्नद-नदीशता—जिसमें सैकड़ों नद और नदियाँ कल-कल नादके साथ आकर मिलती हैं, ९५५ सरिद्वरा—नदियोंमें श्रेष्ठ, ९५६ सुरसा—उत्तम रससे युक्त, ९५७ सुप्रभा—सुन्दर प्रभावाली, ९५८ सुरदीर्घिका—देवताओंकी बावली ॥

स्वः सिन्धुः सर्वदुःखघ्नी सर्वव्याधिमहौषधम् ।
सेव्या सिद्धिः सती सूक्तिः स्कन्धसूश्च सरस्वती १६३

९५९ स्वस्सिन्धुः—स्वर्गलोककी नदी, ९६० सर्व-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुःखघ्नी—सबके दुःखोंका नाश करनेवाली, ९६१ सर्वव्याधि-महौषधम्—समस्त रोगोंकी एकमात्र महौषध, ९६२ सेव्या—सेवन करने योग्य, ९६३ सिद्धिः—अणिमा आदि अष्टसिद्धि-स्वरूपा, ९६४ सती—पतिव्रता, ९६५ सूक्तिः—शुभ उक्तिरूपा अथवा वैदिक-सूक्तस्वरूपा, ९६६ स्कन्दसूः—कार्तिकेय-जननी, ९६७ सरस्वती—वाणीकी अधिष्ठात्री देवी॥ १६३॥

सम्पत्तरङ्गिणी स्तुत्या स्थाणुमौलिकृतालया।
स्थैर्यदा सुभगा सौख्या स्त्रीषु सौभाग्यदायिनी १६४

९६८ सम्पत्तरङ्गिणी—सम्पत्तिरूप लहरोंवाली, ९६९ स्तुत्या—स्तवन करने योग्य, ९७० स्थाणुमौलि-कृतालया—भगवान् शंकरके मस्तकको अपना निवासस्थान बनानेवाली, ९७१ स्थैर्यदा—स्थिरता प्रदान करनेवाली, ९७२ सुभगा—उत्तम ऐश्वर्यसे युक्त, ९७३ सौख्या—सुख देनेवाली, ९७४ स्त्रीषु सौभाग्यदायिनी—स्त्रियोंको सौभाग्य प्रदान करनेवाली ॥ १६४ ॥

स्वर्गनिःश्रेणिका सूक्ष्मा स्वधा स्वाहा सुधाजला।
समुद्ररूपिणी स्वर्ग्या सर्वपातकवैरिणी ॥१६५॥

९७५ स्वर्गनिःश्रेणिका—स्वर्गलोकमें जानेके लिये सीढ़ी रूप, ९७६ सूक्ष्मा—इन्द्रियोंकी पहुँचसे परे स्थित, सूक्ष्मस्वरूपा,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९७७ स्वधा—पितृतृप्तिस्वरूपा, ९७८ स्वाहा—हव्यस्वरूपा, ९७९ सुधाजला—अमृतके समान मधुर जलवाली, ९८० समुद्ररूपिणी—समुद्ररूपा, ९८१ स्वर्गण्या—स्वर्गलोककी प्राप्तिमें सहायक, ९८२ सर्वपातकवैरिणी—समस्त पापोंकी शत्रु ॥ १६५ ॥

स्मृताघहारिणी सीता संसाराब्धितरण्डिका ।
सौभाग्यसुन्दरी संध्या सर्वसारसमन्विता ॥१६६॥

९८३ स्मृताघहारिणी—स्मरण करनेपर ही समस्त पापोंका संहार करनेवाली, ९८४ सीता—सीता नामवाली गङ्गा, जनकनन्दिनीस्वरूपा, ९८५ संसाराब्धितरण्डिका—संसार-सागरसे पार उतारनेके लिये नौकारूप, ९८६ सौभाग्य-सुन्दरी—अतिशय सौभाग्यसे परम सुन्दर प्रतीत होनेवाली, ९८७ संध्या—संध्याकालमें उपास्य गायत्रीरूपा, ९८८ सर्व-सारसमन्विता—समस्त शक्तियोंसे संयुक्त ॥ १६६ ॥

हरप्रिया हृषीकेशी हंसरूपा हिरण्मयी ।
हृताघसंघा हितकृद्धेला हेलाघगर्वहृत् ॥१६७॥

९८९ हरप्रिया—भगवान् शिवकी वल्लभा, ९९० हृषी-केशी—इन्द्रियोंकी स्वामिनी अथवा हृषीकेश भगवान् विष्णुकी पत्नी, ९९१ हंसरूपा—शुद्धस्वरूपा, हंसरूपधारिणी,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९९२ हिरण्मयी—स्वर्णमयी, ज्ञानस्वरूपा, ९९३ हताघसंघा—पापराशियोंका विनाश करनेवाली, ९९४ हितकृत्—हित-साधन करनेवाली, ९९५ हेला—एक प्रकारकी शृङ्गारजनित चेष्टा, ९९६ हेलाघगर्वहृत्—लीलापूर्वक पापका घमंड चूर करनेवाली ॥ १६७ ॥

क्षेमदा क्षालिताघौघा क्षुद्रविद्राविणी क्षमा।
इति नाम सहस्रं हि गङ्गायाः कलशोद्भव॥
कीर्तयित्वा नरः सम्यग्गङ्गास्नानफलं लभेत्॥१६८॥

९९७ क्षेमदा—कल्याणदायिनी, ९९८ क्षालिताघौघा—पापराशिको धो डालनेवाली, ९९९ क्षुद्रविद्राविणी—दुष्टोंको मार भगानेवाली, १००० क्षमा—सहनशीला, पृथ्वीस्वरूपा। अगस्त्यजी! इस प्रकार गङ्गाजीके सहस्र नामोंका कीर्तन करके मनुष्य गङ्गास्नानका उत्तम फल पा लेता है॥

सर्वपापप्रशमनं सर्वविघ्नविनाशनम्।
सर्वस्तोत्रजपाच्छ्रेष्ठं सर्वपावनपावनम्॥१६९॥

यह गङ्गासहस्रनाम सब पापोंका नाश और सम्पूर्ण विघ्नोंका निवारण करनेवाला है। समस्त स्तोत्रोंके जपसे इसका जप श्रेष्ठ है। यह सबको पवित्र करनेवाली वस्तुओंको भी पवित्र करनेवाला है॥ १६९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रद्धयाभीष्टफलदं चतुर्वर्गसमृद्धिकृत् ।
सकृज्जपादवाप्नोति ह्येकक्रतुफलं मुने ॥१७०॥

श्रद्धापूर्वक इसका पाठ करनेपर यह मनोवाञ्छित फल देनेवाला है; धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—चारों पुरुषार्थों-की प्राप्ति करानेवाला है। मुने! इसका एक बार पाठ करनेसे भी एक यज्ञका फल प्राप्त होता है ॥ १७० ॥

सर्वतीर्थेषु यः स्नातः सर्वयज्ञेषु दीक्षितः ।
तस्य यत्फलमुद्दिष्टं त्रिकालपठनाच्च तत् ॥१७१॥

जो सब तीर्थोंमें स्नान कर चुका है और सम्पूर्ण यज्ञोंकी दीक्षा ले चुका है, उसके लिये शास्त्रमें जो फल बताया गया है, वही इस स्तोत्रका तीनों समय पाठ करनेसे प्राप्त होता है ॥ १७१ ॥

सर्वव्रतेषु यत्पुण्यं सम्यक्चीर्णेषु वाडव ।
तत्फलं समवाप्नोति त्रिसंध्यं नियतः पठन् ॥१७२॥

अगस्त्यजी! सम्पूर्ण व्रतोंका विधिपूर्वक पालन करनेसे जो पुण्यफल प्राप्त होता है, उसीको नियमपूर्वक तीनों संध्याओंके समय इसका पाठ करनेवाला पुरुष पा लेता है ॥ १७२ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्नानकाले पठेद्यस्तु यत्र कुत्र जलाशये।
तत्र संनिहिता नूनं गङ्गा त्रिपथगा मुने ॥१७३॥

मुने ! जिस किसी भी जलाशयमें स्नान करते समय जो इस गङ्गासहस्रनामका पाठ करता है, वहाँ उसके लिये त्रिपथ-गामिनी गङ्गा निश्चय ही उपस्थित हो जाती हैं ॥ १७३ ॥

श्रेयोऽर्थी लभते श्रेयो धनार्थी लभते धनम्।
कामी कामानवाप्नोति मोक्षार्थी मोक्षमाप्नुयात् १७४

इसका पाठ करनेवाला मनुष्य यदि कल्याण चाहता है, तो उसे कल्याण मिलता है, धनार्थी हो तो धन पाता है, कामनाओंकी पूर्ति चाहता हो तो उसकी सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण होती हैं और यदि वह वैराग्यवान् होकर मोक्षकी इच्छा करता है तो मोक्ष प्राप्त कर लेता है ॥ १७४ ॥

वर्षं त्रिकालपठनाच्छ्रद्धया शुचिमानसः।
ऋतुकालाभिगमनादपुत्रः पुत्रवान् भवेत् ॥१७५॥

यदि मनुष्य पवित्र अन्तःकरणसे एक वर्षतक तीनों समय श्रद्धापूर्वक इस स्तोत्रका पाठ करे और ऋतुकाल प्राप्त होनेपर पत्नीके साथ समागम करे तो पुत्रहीन होनेपर भी पुत्रवान् हो जाता है ॥ १७५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नाकालमरणं तस्य नाग्निचोराहिसाध्वसम् ।
नाम्नां सहस्रं गङ्गाया यो जपेच्छ्रद्धया मुने ॥१७६॥

मुने ! जो गङ्गासहस्रनामका श्रद्धापूर्वक जप करता है, उसकी अकाल मृत्यु नहीं होती तथा उसे अग्नि, चोर और सर्पका भी भय नहीं प्राप्त होता ॥ १७६ ॥

गङ्गानामसहस्रं तु जप्त्वा ग्रामान्तरं व्रजेत् ।
कार्यसिद्धिमवाप्नोति निर्विघ्नो गेहमाविशेत्॥१७७॥

गङ्गासहस्रनामका जप करके यदि कोई कार्यवश दूसरे गाँवमें जाय तो उसका वह कार्य सिद्ध हो जाता है और वह बिना किसी विघ्न-बाधाके घर लौट आता है ॥ १७७ ॥

तिथिवारर्क्षयोगानां न दोषः प्रभवेत्तदा ।
यदा जप्त्वा व्रजेदेतत् स्तोत्रं ग्रामान्तरं नरः॥१७८॥

जब मनुष्य इस स्तोत्रका पाठ करके दूसरे गाँवकी यात्रा करता है, तब उसपर तिथि, वार, नक्षत्र और योगसम्बन्धी दोष कोई प्रभाव नहीं डालता ॥ १७८ ॥

आयुरारोग्यजननं सर्वोपद्रवनाशनम् ।
सर्वसिद्धिकरं पुंसां गङ्गानामसहस्रकम् ॥१७९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गङ्गासहस्रनाम आयु तथा आरोग्य देनेवाला और सम्पूर्ण उपद्रवोंका नाश करनेवाला है। यह मनुष्योंको सब प्रकारकी सिद्धि देनेवाला है ॥ १७९ ॥

जन्मान्तरसहस्रेषु यत्पापं सम्यगर्जितम् ।
गङ्गानामसहस्रस्य जपनात्तत्क्षयं व्रजेत् ॥१८०॥

पिछले सहस्रों जन्मोंमें पुष्कलरूपमें बटोरा हुआ पाप भी गङ्गासहस्रनामके जपसे नष्ट हो जाता है ॥ १८० ॥

ब्रह्मघ्नो मद्यपः स्वर्णस्तेयी च गुरुतल्पगः ।
तत्संयोगी भ्रूणहन्ता मातृहा पितृहा मुने ॥१८१॥
विश्वासघाती गरदः कृतघ्नो मित्रघातकः ।
अग्निदो गोवधकरो गुरुद्रव्यापहारकः ॥१८२॥
महापातकयुक्तोऽपि संयुक्तोऽप्युपपातकैः ।
मुच्यते श्रद्धया जप्त्वा गङ्गानामसहस्रकम् ॥१८३॥

मुने ! जो ब्रह्महत्यारा, शराब पीनेवाला, सुवर्णकी चोरी करनेवाला, गुरुपत्नीगामी तथा इन सबके साथ संसर्ग रखनेवाला है, जिसने भ्रूणहत्या, मातृहत्या और पितृहत्या की है, जो विश्वासघाती, दूसरोंको विष देनेवाला, कृतघ्न, मित्रघाती, आग लगानेवाला, गोवध करनेवाला तथा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरुके धनको हड़प लेनेवाला है—सारांश जो इस प्रकार महापातकों और उपपातकोंसे युक्त है, वह भी श्रद्धापूर्वक गङ्गासहस्र-नामका जप करनेसे उन सब पापोंसे छूट जाता है ॥ १८१–१८३ ॥

आधिव्याधिपरिक्षिप्तो घोरतापपरिप्लुतः ।
मुच्यते सर्वदुःखेभ्यः स्तवस्यास्यानुकीर्तनात् ॥ १८४ ॥

जो रोगों तथा मानसिक चिन्ताओंसे घिरा है, घोर ताप में डूबा हुआ है, वह इस स्तोत्रके पाठकी आवृत्ति करनेसे सम्पूर्ण दुःखोंसे छुटकारा पा जाता है ॥ १८४ ॥

संवत्सरेण युक्तात्मा पठन् भक्तिपरायणः ।
अभीप्सितां लभेत्सिद्धिं सर्वैः पापैः प्रमुच्यते ॥ १८५ ॥

जो एक वर्षतक मनको एकाग्र करके गङ्गाजीकी भक्तिमें तत्पर हो इस स्तोत्रका पाठ करता है, वह अभीष्ट सिद्धिको प्राप्त कर लेता है और समस्त पापोंसे सर्वथा मुक्त हो जाता है ॥ १८५ ॥

संशयाविष्टचित्तस्य धर्मविद्वेषिणोऽपि च ।
दाम्भिकस्यापि हिंस्रस्य चेतो धर्मपरं भवेत् ॥ १८६ ॥

जिसका चित्त संशयसे ग्रस्त है, जो धर्मसे महान् द्वेष रखता है तथा दम्भी और हिंसक है, उसका चित्त भी इस स्तोत्रके पाठसे धर्मपरायण हो जाता है ॥ १८६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वर्णाश्रमपथीनस्तु कामक्रोधविवर्जितः ।
यत्फलं लभते ज्ञानी तदाप्नोत्यस्य कीर्तनात् ॥१८७॥

वर्णाश्रमके पथपर चलनेवाला, काम और क्रोधसे सर्वथा रहित ज्ञानी पुरुष जिस फलको पाता है, उसीको इस सहस्रनाम-का कीर्तन करनेसे भी प्राप्त कर लेता है ॥ १८७ ॥

गायत्र्ययुतजप्येन यत्फलं समुपार्जितम् ।
सकृत्पठनतः सम्यक्तदशेषमवाप्नुयात् ॥१८८॥

दस हजार गायत्री-मन्त्रका जप करनेसे जो पुण्यफल पुष्कल-रूपमें प्राप्त होता है, वह सारा-का-सारा इस स्तोत्रका एक बार विधिपूर्वक पाठ करनेमात्रसे मिल जाता है ॥ १८८ ॥

गां दत्त्वा वेदविदुषे यत्फलं लभते कृती ।
तत्पुण्यं सम्यगाख्यातं स्तवराजसकृज्जपात् ॥१८९॥

विद्वान् एवं पुण्यात्मा पुरुष वेदवेत्ता ब्राह्मणको गोदान करके जो फल पाता है, इस स्तोत्रराजके एक बार जपसे उसी पुण्यफलकी सम्यक् प्राप्ति बतायी गयी है ॥ १८९ ॥

गुरुशुश्रूषणं कुर्वन् यावज्जीवं नरोत्तमः ।
यत्पुण्यमर्जयेत्तद्भाग्वर्षं त्रिषवणं जपन् ॥१९०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आजीवन गुरुजनोंकी सेवा करनेवाला श्रेष्ठ मनुष्य जिस पुण्यफलका उपार्जन करता है, उसीको एक वर्षतक इस सहस्रनामका तीनों समय जप करनेवाला मनुष्य प्राप्त कर लेता है ॥ १९० ॥

वेदपारायणात् पुण्यं यदत्र परिपठ्यते ।
तत्षण्मासेन लभते त्रिसंध्यं परिकीर्तनात् ॥१९१॥

वेदोंका पारायण करनेसे इस जगत्में जो पुण्य बताया जाता है, वह छः मासतक तीनों समय इस सहस्रनामका श्रद्धा-पूर्वक पाठ करनेसे मिल जाता है ॥१९१ ॥

गङ्गायाः स्तवराजस्य प्रत्यहं परिशीलनात् ।
शिवभक्तिमवाप्नोति विष्णुभक्तोऽथवा भवेत्॥१९२॥

गङ्गाके इस स्तोत्रराजका प्रतिदिन परिशीलन (मनन) करनेसे मनुष्य भगवान् शिवकी भक्ति पाता है अथवा वह भगवान् विष्णुका भक्त हो जाता है ॥१९२ ॥

यः कीर्तयेदनुदिनं गङ्गानामसहस्रकम् ।
तत्समीपे सहचरी गङ्गादेवी सदा भवेत् ॥१९३॥

जो प्रतिदिन गङ्गासहस्रनामका कीर्तन करता है, गङ्गा देवी सदा उसके समीप और साथ-साथ रहती हैं ॥ १९३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वत्र पूज्यो भवति सर्वत्र विजयी भवेत् ।
सर्वत्र सुखमाप्नोति जाह्नवीस्तोत्रपाठतः ॥१९४॥

गङ्गादेवीके इस स्तोत्रका पाठ करनेसे मनुष्य सर्वत्र पूज्य होता है, सर्वत्र विजयी होता है और सर्वत्र सुख पाता है ॥ १९४ ॥

सदाचारी स विज्ञेयः स शुचिस्तु सदैव हि ।
कृतसर्वसुरार्चः स कीर्तयेद्य इमां स्तुतिम् ॥१९५॥

जो इस स्तुतिका पाठ करता है, उसे वास्तवमें सदाचारी जानना चाहिये । वह सदा ही पवित्र है तथा उसने सम्पूर्ण देवताओंकी पूजा सम्पन्न कर ली है ॥ १९५ ॥

तस्मिंस्तृप्ते भवेत् तृप्ता जाह्नवी नात्र संशयः ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गङ्गाभक्तं समर्चयेत् ॥१९६॥

उसके तृप्त होनेसे साक्षात् गङ्गाजी तृप्त हो जाती हैं, इसमें संशय नहीं है । अतः सर्वथा प्रयत्न करके गङ्गाजीके भक्तका पूजन करे ॥ १९६ ॥

स्तवराजमिमं गाङ्गं शृणुयाद्यश्च वै पठेत् ।
श्रावयेदथ तद्भक्तान् दम्भलोभविवर्जितः ॥१९७॥
मुच्यते त्रिविधैः पापैर्मनोवाक्कायसम्भवैः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्षणान्निष्पापतामेति पितृणां च प्रियो भवेत्॥ १९८॥

जो गङ्गाजीके इस स्तोत्रराजका श्रवण और पाठ करता है अथवा दम्भ और लोभसे रहित होकर उनके भक्तोंको सुनाता है, वह मानसिक, वाचिक और शारीरिक—तीनों प्रकारके पापोंसे मुक्त हो जाता है, क्षणभरमें निष्पाप हो जाता तथा पितरोंका प्रिय होता है॥ १९७-१९८॥

सर्वदेवप्रियश्चापि सर्वर्षिगणसम्मतः।
अन्ते विमानमारुह्य दिव्यस्त्रीशतसंवृतः॥१९९॥
दिव्याभरणसम्पन्नो दिव्यभोगसमन्वितः।
नन्दनादिवने स्वैरं देववत्स प्रमोदते॥२००॥

वह सम्पूर्ण देवताओंका प्रिय होता है, सभी ऋषि उसका सम्मान करते हैं और अन्तमें वह दिव्य विमानपर आरूढ़ हो सैकड़ों दिव्याङ्गनाओंसे घिरकर दिव्य आभूषण तथा दिव्य भोगोंसे सम्पन्न हो स्वेच्छानुसार नन्दन आदि वनोंमें देवताकी भाँति आनन्दका उपभोग करता है॥१९९-२००॥

भुज्यमानेषु विप्रेषु श्राद्धकाले विशेषतः।
जपन्निदं महास्तोत्रं पितृणां तृप्तिकारकम्॥२०१॥

विशेषतः श्राद्धके समय जब ब्राह्मण भोजन कर रहे हों,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उस समय इस महास्तोत्रका जप करे तो पितरोंके लिये यह अत्यन्त तृप्तिदायक होता है ॥ २०१ ॥

यावन्ति तत्र सिक्थानि यावन्तोऽम्बुकणाःस्थिताः ।
तावन्त्येव हि वर्षाणि मोदन्ते स्वपितामहाः ॥२०२॥

उस श्राद्धमें जितने अन्नके दानें और जितने जलकण होते हैं, उतने ही वर्षोंतक उसके पितर स्वर्गमें सुख भोगते हैं ॥ २०२ ॥

यथा पितरः प्रीणन्ति गङ्गायां पिण्डदानतः ।
तथैव तृप्नुयुः श्राद्धे स्तवस्यास्यानुसंश्रवात् ॥२०३॥

गङ्गाजीके तटपर पिण्डदान करनेसे पितरोंको जैसी प्रसन्नता होती है, श्राद्धमें इस गङ्गास्तोत्रका श्रवण करनेसे भी उन्हें वैसी ही तृप्ति हो सकती है ॥ २०३ ॥

एतत्स्तोत्रं गृहे यस्य लिखितं परिपूज्यते ।
तत्र पापभयं नास्ति शुचि तद्भवनं सदा ॥२०४॥

जिसके घरमें गङ्गाजीका यह स्तोत्र लिखकर इसकी पूजा की जाती है, वहाँ पापका कोई भय नहीं रहता, भली-भाँति वह घर सदा पवित्र है ॥ २०४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अगस्ते किं वहूक्तेन शृणु मे निश्चितं वचः ।
संशयो नात्र कर्तव्यः संदेग्धरि फलं नहि ॥२०५॥

अगस्त्यजी ! अधिक कहनेकी क्या आवश्यकता ? आप मेरे इस निश्चयात्मक वचनको सुनिये । इस स्तोत्रकी महिमाके विषयमें संशय नहीं करना चाहिये; क्योंकि संशय करनेवालेको कोई फल नहीं मिलता ॥२०५ ॥

यावन्ति मर्त्ये स्तोत्राणि मन्त्रजालान्यनेकशः ।
तावन्ति स्तवराजस्य गाङ्गेयस्य समानि न ॥२०६॥

इस मर्त्यलोकमें जितने स्तोत्र हैं, अनेक प्रकारके जो मन्त्रसमुदाय हैं, वे सब-के-सब गङ्गाजीके इस स्तोत्रराजके समान नहीं हैं ॥ २०६ ॥

यावज्जन्म जपेद्यस्तु नाम्नामेतत्सहस्रकम् ।
स कीकटेष्वपि मृतो न पुनर्गर्भमाविशेत् ॥२०७॥

जो इस सहस्रनामका आजीवन जप करता है, वह कीकटों (मगध आदि निन्द्य देशों) में भी मर जाय तो पुनः गर्भमें नहीं आता ॥ २०७ ॥

नित्यं नियमवानेतद्यो जपेत् स्तोत्रमुत्तमम् ।
अन्यत्रापि विपन्नः स गङ्गातीरे मृतो भवेत्॥२०८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रतिदिन नियमपूर्वक रहकर जो इस स्तोत्रका जप करता है, उसकी अन्यत्र मृत्यु हो जाय तो भी उसे गङ्गातटपर ही मरनेका फल होता है ॥२०८॥

एतत्स्तोत्रवरं रम्यं पुरा प्रोक्तं पिनाकिना।
विष्णवे निजभक्ताय मुक्तिबीजाक्षरास्पदम् ॥२०९॥

पूर्वकालमें पिनाकधारी महादेवजीने अपने भक्त भगवान् विष्णुके प्रति इस सुन्दर एवं श्रेष्ठ स्तोत्रका वर्णन किया था। यह मोक्षका बीज तथा ब्रह्मकी आवासभूमि है ॥ २०९ ॥

गङ्गास्नानप्रतिनिधिः स्तोत्रमेतन्मयेरितम्।
सिस्नासुर्जाह्नवीं तस्मादेतत् स्तोत्रं जपेत्सुधीः।२१०।

यह स्तोत्र गङ्गास्नानका प्रतिनिधि है। इसका मैंने आपके समक्ष वर्णन किया है। अतः जो विद्वान् गङ्गाजीमें स्नान करना चाहे, वह इस स्तोत्रका जप करे ॥ २१० ॥

इति श्रीस्कन्दपुराणे काशीखण्डे पूर्वार्धे
श्रीगङ्गासहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्

इस प्रकार श्रीस्कन्दपुराण काशीखण्डके पूर्वार्द्धभागमें वर्णित श्रीगङ्गासहस्रनामस्तोत्र पूरा हुआ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीमद्भगवद्गीताएँ

श्रीमद्भगवद्गीता-तत्त्वविवेचनी—पृष्ठ ६८४, चित्र ४, ४)

श्रीमद्भगवद्गीता—शाङ्करभाष्य-सानुवाद, पृष्ठ ५२०, चित्र ३, मूल्य ... ... २॥)

श्रीमद्भगवद्गीता—रामानुज भाष्य-सानुवाद, पृष्ठ ६०८, चित्र ३, मूल्य ... ... २॥)

श्रीमद्भगवद्गीता [वड़ी]—पृष्ठ ५७०, चित्र ४, मूल्य १।)

श्रीमद्भगवद्गीता [मझली]—पृष्ठ ४६८, चित्र ४, मूल्य ॥≥) सजिल्द ... १)

श्रीमद्भगवद्गीता [लाहोरी ढंगकी]—पृष्ठ ४२४, चित्र २, मूल्य ।॥=) सजिल्द ... १।)

श्रीमद्भगवद्गीता [मोटा टाइप]—पृष्ठ ३१६, सचित्र, मूल्य ॥) सजिल्द ... ... ।॥=)

श्रीमद्भगवद्गीता [मोटे अक्षरवाली]—पृष्ठ २१६, सचित्र, मूल्य ।–) सजिल्द ... ... ॥–)

श्रीमद्भगवद्गीता [केवल भाषा]—पृष्ठ १९२, सचित्र, मूल्य ... ... ।)

श्रीपञ्चरत्न गीता—पृष्ठ १८४, मूल्य ... ≡)

श्रीमद्भगवद्गीता [पाकेट-साइज]—पृष्ठ ३५२, मूल्य=)॥ सजिल्द ... ।)॥

श्रीमद्भगवद्गीता [तावीजी मूल]—पृष्ठ २९६, मूल्य =)

श्रीमद्भगवद्गीता—विष्णुसहस्रनामसहित, पृष्ठ १२८, सचित्र, मूल्य –)॥ सजिल्द ... =)॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सानुवाद उपनिषद् शाङ्करभाष्य

ईशावास्योपनिषद्–पृष्ठ ५२, सचित्र, मूल्य ... ≈)
केनोपनिषद्–पृष्ठ १४२, सचित्र, मूल्य ... ॥)
कठोपनिषद्–पृष्ठ १७८, सचित्र, मूल्य ... ॥–)
प्रश्नोपनिषद्–पृष्ठ १२८, सचित्र, मूल्य ... ।≈)
मुण्डकोपनिषद्–पृष्ठ १२२, सचित्र, मूल्य ... ।≈)
माण्डूक्योपनिषद्–पृष्ठ २८४, सचित्र, मूल्य ... १)
ऐतरेयोपनिषद्–पृष्ठ १०४, सचित्र, मूल्य ... ।=)
तैत्तिरीयोपनिषद्–पृष्ठ २५२, सचित्र, मूल्य ... ॥।–)
छान्दोग्योपनिषद्–पृष्ठ९६८, चित्र९, मूल्य सजिल्द ... ३॥।)
श्वेताश्वतरोपनिषद्–पृष्ठ २६८, सचित्र, मूल्य ... ॥।=)
बृहदारण्यकोपनिषद्–पृष्ठ १३८४, चित्र ६, मूल्य ५॥)

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भारतनिधि, कचौड़ी
वाराणसी-1

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुछ शास्त्र-ग्रन्थ अनुवादसा

श्रीविष्णुपुराण—सानुवाद, पृष्ठ ६२४, चित्र ८, मूल
अध्यात्मरामायण—सानुवाद, पृष्ठ ४००, चित्र ८, म
वेदान्त-दर्शन—सानुवाद, पृष्ठ ४१६, सचित्र, मूल
पातञ्जलयोगदर्शन—सटीक, पृष्ठ १९२, चित्र
मूल्य ।।।) सजिल्द ... ..
श्रीदुर्गासप्तशती—सानुवाद, पृष्ठ २४०, सचि
मूल्य ।।।) सजिल्द ... ...
विष्णुसहस्रनाम शांकरभाष्य—सटीक, पृष्ठ २८
सचित्र, मूल्य ...
सूक्ति-सुधाकर—सानुवाद, पृष्ठ २६
मूल्य ।।=) सजिल्द ... ..
स्तोत्ररत्नावली—सानुवाद, पृष्ठ ३२
मूल्य ।।) सजिल्द ...
विदुरनीति—सानुवाद, पृष्ठ १६८, मूल्य
नित्यकर्मप्रयोग—पृष्ठ १३६, मूल्य
प्रेम-दर्शन—सटीक, पृष्ठ १९२, सचित्र, मूल्य
विवेक-चूडामणि—सानुवाद, पृष्ठ १८४, सचित्र:

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi